चैतन्य लहरी

हिन्दी आवृत्ति
खण्ड VII अंक 3 व 4 1995

"हृदय में पूजा करना सर्वोत्तम है। मेरी जिस तस्वीर को आप देख रहे हैं उसे यदि हृदय-गम्य कर सकें या पूजा के पश्चात इसकी झलक हृदय की गहराइयों में उतार सकें तो वह आनन्द जो आप उस समय प्राप्त करते हैं, शाश्वत तथा अनन्त बन सकता है।"

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी

चैतन्य लहरी

चैतन्य लहरी खण्ड VII, अंक 3 व 4

-: विषय-सूची :-

1.	श्री गणेश जी के 12 पावन नाम	1
2.	श्री माता जी का गुडी पडवा सन्देश	2
3.	श्री माता जी का राम नवमी सन्देश	3
4.	श्री कृष्ण पूजा प्रवचन 28-8-1994	4
5.	श्री गणेश पूजा (मास्को) 11-9-1994	10
6.	होली तत्व	13
7.	नवरात्रि पूजा कबैला 9-10-1994	16
8.	मास्को सार्वजनिक कार्यक्रम 12-10-1994	22
9.	दिवाली पूजा (इस्ताम्बूल)	24

सम्पादक : श्री योगी महाजन

मुद्रक एवं प्रकाशक : श्री विजय नलगिरकर
162, मुनीरका विहार,
नई दिल्ली-110 067

मुद्रित : प्रिन्टेक फोटोटाईपसैटर्स,
35, ओल्ड राजेन्द्र नगर मार्केट,
नई दिल्ली-110 060
फोन : 5710529, 5784866

श्री गणेश पूजा, मास्को (रूस) में, 11 सितम्बर 1994 को श्री माता जी को समर्पित किए गए

श्री गणेश जी के 12 पावन नाम

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गज कर्णक:।
लम्बो-दरश्च विकटो, विघ्ननाशो गणाधिप:।।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो, भाल चन्द्रो गजानन:।
द्वादशैतानि नमानि य: पठेच्छृणुयादपि।।
विद्यारंभे विवाहे च, प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे-चैव, विघ्नस्तस्य न जायते।।

1. सुमुख:
2. एक दन्त:
3. कपिल:
4. गजकर्णक:
5. लम्बोदर:
6. विकट:
7. विघ्न-नाशक:
8. गणाधिपति
9. धूम्रकेतु
10. गणाध्यक्ष:
11. भाल चन्द्र:
12. गजानन:

"श्री गणेश आपकी माँ के शक्तिशाली अवलंब (सहायक) हैं। आप सब भी मेरे आश्रय हैं। परन्तु मुझे आश्रय देने के लिए आपको अत्यन्त दृढ़ एवं निश्छल होना होगा क्योंकि मैंने आपको श्री गणेश की तरह ही बनाया है।"

प. पू. माता जी श्री निर्मला देवी.

परम पूज्य श्री माता जी का

गुडी पडवा संदेश

(महाराष्ट्र में नव वर्ष – 31 मार्च 1995)

सहजयोग में अब छँटनी आरम्भ हो गयी है। सहजयोगी केवल मेरे दर्शन एवं पूजा चाहते हैं। अपनी आत्मा के दर्शन किए बिना मेरे दर्शन का क्या लाभ है?

मैं देखती हूँ कि सहजयोगी ध्यान नहीं करते। ध्यान-धारणा के बिना सम्पर्क नहीं बन सकता। ध्यान धारणा के बिना आप विकसित नहीं हो सकते। ध्यान-धारणा ही एकमात्र मार्ग है। मैने आपको मार्ग दिखा दिया है फिर भी आप ध्यान नहीं करते। कलियुग में आपने किसी लक्ष्य के लिए जन्म लिया है, परन्तु यदि आप ध्यान नहीं करेंगे तो डूब जाएंगे। ध्यान धारणा के अभाव में अच्छे-अच्छे सहजयोगियों का पतन हो जाता है।

ध्यान-धारणा आपको उन्नत करती है। आरम्भ में एक वर्ष तक नियमित रूप से ध्यान-धारणा करने का संकल्प लेना होगा। तब आप इसका आनन्द लेने लगेंगे।

अपनी परीक्षा में सफलता का आशीर्वाद लेने के लिए विद्यार्थियों को प्रतिदिन ध्यान करना चाहिए। पहले पूजा करने का अधिकार प्राप्त करना आवश्यक है। यदि आप नियमित रूप से ध्यान नहीं करते हैं तो आप पूजा में सम्मिलित नहीं हो सकते। पूजा में आने से पहले अपने चक्रों को साफ करें तथा ध्यान करें नहीं तो मुझे कष्ट होता है। पूजा के मध्य लोगों को घड़ी नहीं देखनी चाहिए।

महाराष्ट्र में मैने सबसे अधिक कार्य किया, परन्तु ध्यान-धारणा न करने के कारण वहाँ सहजयोगियों का स्तर नहीं है। वे आक्रामक हो गए हैं। जब ऐसे हो जाते हैं तो दायाँ हृदय पकड़ने लगता है। बिना ध्यान-धारणा किए दर्शन और पूजा सहायक नहीं हो सकते, आप चैतन्य लहरियों को आत्मसात ही न कर पाएंगे। मैं आश्चर्य चकित हूँ कि महाराष्ट्र में इतने अधिक सन्तों के होने के बावजूद भी लोगों का चित्त आत्मा पर नहीं है।

समर्पित होने पर आपकी हर इच्छा पूर्ण हो जाती है। हाल ही में मैक्सिको की एक सहजयोगिनी ने मुझे अपने पुत्र की भयंकर बीमारी के विषय में लिखा कि "श्रीमाता जी मैं जानती हूं कि आप ही मेरे पुत्र को रोग मुक्त करेंगी।" उसने ऐसे दो पत्र लिखे और तीसरे पत्र में उसने लिखा कि "श्री माता जी, आपकी कृपा से मेरा पुत्र रोगमुक्त हो गया है।" समर्पण की शक्ति इस प्रकार कार्य करती है। ध्यान-धारणा द्वारा अब आपने अपने सम्बन्ध को स्थापित करना है।

परमात्मा आपको आशीर्वादित करें।

●●

परमपूज्य माता जी श्री निर्मला देवी का राम नवमी सन्देश

काठमण्डु 9-4-95

संचार बनाये रखने के लक्ष्य से मैं लीडर बनाती हूँ, अन्यथा अगुआगणों में कोई विशेष बात नहीं है। परन्तु कोई भी मुझसे उनके विषय में शिकायत नहीं करे। उनके बारे में मैं सब कुछ जानती हूँ और उन्हें सुधारना भी मुझे आता है।

अगुआओं को चाहिए कि केन्द्रों में भाषण न दें। वे केवल मेरे टेप चला दें और इस बात का ध्यान रखें कि लोगो को चैतन्य लहरियां मिल रही हैं कि नहीं।

अपना प्रभाव जमाने का वे प्रयत्न न करें, अत्यन्त नम्रता से पीछे रहते हुए अन्य लोगों की शान्ति पूर्वक सहायता करते रहें। आपको देख कर ही लोग सहजयोग में आयेंगे। सहजयोगियों को मेरे साथ तादात्म्य स्थापित करना चाहिए, अगुआओं के साथ नहीं।

आपकी सारी समस्याएं चक्र-विकारों के कारण आती हैं। चक्रों के ठीक होते ही समस्याएं समाप्त हो जाती हैं। नकारात्मक और सकारात्मक शक्तियों में सदा युद्ध चलता रहता है।

आन्तरिक नम्रता का होना आवश्यक है, इसके बिना आप सहजयोग समुद्र में खो जाएगें। परन्तु यह नम्रता अन्दर से आनी चाहिए।

आत्म निरीक्षण करें कि, "मुझमें क्या कमी है।"

अपने देश का यदि आप हित चाहते हैं तो देश, जाति आदि से लिप्त न हों। लोगों के संवेदनशील हुए बिना सहजयोग बढ़ नहीं सकता।

नये लोगों के प्रति करुणामय बनें। उन्हें ये न बतायें कि वे पकड़े हुए हैं। अपनी करुणा को दर्शायें। उन्हें बतायें कि "मैं भी इन्हीं समस्याओं में से निकला हूँ, "मैं भी आप ही जैसा था।" तभी वे आपके साथ तादात्म्य स्थापित कर सकेंगें। यदि उन्होंने गहनता प्राप्त कर ली है तो 6 महीनों के बाद वे पूजा में सम्मलित हो सकते हैं। उन्हें पूजा के निमयाचरणों के विषय में बताएं। केन्द्र में शान्ति और व्यवस्था करने वालों में मेल-मिलाप का वातावरण होना चाहिए। लोग आपसे शान्ति प्राप्त करें। धन सम्बन्धी मामलों की बातचीत न करें।

सदा याद रखें कि प्रेम की दिव्य शक्ति के सम्मुख सारा असत्य लड़खड़ा जाता है। आसुरी शक्ति कुछ समय के लिए रह सकती है परन्तु अन्ततः उनका पतन हो जाएगा। यह सब मेरा कार्य है, मुझ पर छोड़ दें।

●●

श्री कृष्ण पूजा प्रवचन (सारांश)

कबैला - इटली - 28 अगस्त 1994

श्री कृष्ण ब्रह्माण्ड के रक्षक श्री विष्णु का अवतरण थे। संसार की सृष्टि करते समय यह जरुरी था कि एक रक्षक की भी सृष्टि की जाए नहीं तो ये संसार नष्ट हो जाता। यदि मानव को आरक्षित छोड़ दिया जाता तो स्वभाव वश उसने इस संसार का कुछ भी कर दिया होता। विकास की प्रक्रिया के दौरान श्री विष्णु ने भिन्न-भिन्न रूप लिये। उन्होने अपने आस-पास कई पैगम्बरों का वातावरण उत्पन्न किया ताकि वे इस संसार मे धर्म की रक्षा कर सकें अत: संरक्षण का आधार धर्म था। इस धर्म में जो कुछ भी स्थापित करना था वह संतुलन से स्थापित करना था। अति में जाना मानव की आदत है।

सन्तुलन स्थापित करना धर्म का पहला सिद्धान्त है। बिना सन्तुलन के व्यक्ति उत्थान नहीं प्राप्त कर सकता। जहाज बिना सन्तुलन के चल नहीं सकता। इसी प्रकार पहले मनुष्य को संतुलन प्राप्त करना होगा, परन्तु सभी मनुष्य अलग-अलग योग्यता तथा क्षमता के साथ जन्मे हैं। यह कहा गया है "या देवी सर्वभूतेषू जाति रूपेण संस्थिता" अर्थात् क्षमता अलग-अलग है। हम भिन्न-भिन्न क्षमताओं, चेहरों तथा रंगो में पैदा हुए हैं क्योंकि विविधता लाना आवश्यक था। यदि सब एक जैसे दिखते तो वे 'रोबोट' जैसे लगते। सभी मानव अलग तरीके से देश और माता-पिता के अनुरूप उत्पन्न किये गये हैं। यह सब व्यवस्था श्री विष्णु के सिद्धान्त द्वारा की गई है। उन्होंने इस विश्व को विविधता पूर्ण बनाया है।

इस कार्य में श्री कृष्ण दक्ष हैं। जिस समय श्री कृष्ण अवतरित हुए लोग बहुत ही गम्भीर प्रकृति के थे और अत्यन्त कर्मकाण्डी बन गये थे। इसका कारण यह था कि इससे पहले श्री राम आये और उन्होने मर्यादाओं की बात की। इन मर्यादाओं ने लोगों को बेहद कठोर बना दिया। इस कठोरता के कारण लोगों ने आनन्द, सुन्दरता और विविधता की भावना को खो दिया।

श्री कृष्ण का अवतरण सम्पूर्ण रूप में हुआ जैसे चन्द्रमा की सोलह कलायें हैं उनकी भी सोलह पंखुड़ियाँ हैं। अत: वह सम्पूर्ण हैं। वह पूर्णिमा है "पूर्ण चन्द्रमा"। विष्णु के अवतरण की पूर्णता के साथ, वह पूर्ण थे और यह पूर्णता अभिव्यक्ति हुई। राम के अवतरण में जो कुछ कमी रह गयी थी इन्होंने उसे दूर किया। दायें हृदय में 12 पंखुड़ियाँ हैं। जिन बातों की ओर लोगों का ध्यान ही नही जाता इन्होंने वह सब दर्शायीं। जब गीता लिखी गई तो लोगों ने उसका अनुकरण करना शुरु कर दिया।

श्री कृष्ण ने अर्जुन से कहा, "इस समय तुम्हे धर्म और सत्य के लिये लड़ना है।" अर्जुन ने कहा, "मैं अपने रिश्तेदारों और सम्बन्धियों को नहीं मार सकता" उन्होने कहा, "तुम कौन हो मारने वाले, वे तो पहले ही मरे हुए हैं, क्योंकि वे अधर्मी हैं। यदि तुम में धर्म नहीं है तो तुम पहले ही मरे हुए हो। उसमें मारना या न मारना कहाँ?"

अर्जुन को यह संदेश कुरुक्षेत्र में दिया गया। फिर वह बोला, "आपने मुझे इन लोगों को मारने के लिए कहा है, मैं धर्म पर स्थित हूँ अत: मैं इन्हें मार रहा हूँ। मगर इससे परे क्या है। तो श्री कृष्ण ने सहजयोग का वर्णन किया। उन्होने दूसरे अध्याय में बताया है कि "स्थितप्रज्ञ क्या है?"

यह वह व्यक्ति है जो सन्तुलन में है। फिर उन्होंने कहा कि ऐसा व्यक्ति कभी क्रोधित नहीं होता। अन्दर से वह पूर्णत: शान्त होता है। उन्होंने बताया व्यक्ति को कैसे बनना चाहिए। उस समय कौरव पाण्डवों से लड़ रहे थे। युद्ध के दौरान उन्होंने उसे बताया कि स्थित प्रज्ञ बन कर ही तुम इन सब समस्याओं तथा बन्धनों से ऊपर उठ सकते हो। और तभी आप आन्तरिक शान्ति प्राप्त कर सकते हो।

आधुनिक समय में हमें कौरवों से नहीं लड़ना है। पाँच पाण्डवों को कौरवों से लड़ना पड़ा। ये पाँच पाण्डव कौन हैं? ये हमारी इन्द्रियाँ हैं या भिन्न तत्वों में विभाजित ब्रह्माण्ड हैं। हमारे अन्त:स्थित कौरवों से इन्हें लड़ना पड़ता है। यहाँ पर 100 कौरव हैं। प्रकृति को अपने विरोधी तत्वों से लड़ना पड़ता है। लोग कहेंगे क्रोध स्वाभाविक है। आक्रामक होना स्वाभाविक था। अब हमें जान लेना

है कि हममें उत्थान की प्राकृतिक क्षमता है। ऊँचे उठना स्वाभाविक है। सहजयोगी बनना स्वाभाविक है। इसकी रचना भी हमारे अन्दर की गयी है। उदाहरणतया एक बीज है। फिर वह अंकुरित होता है, वृक्ष बनता है। अत: यह सब बीज में निहित है कि सारा भविष्य, हजारों वृक्ष जो कि वहाँ होंगे वे भी इस बीज में हैं। आजकल यह प्रयोग कर रहे हैं। एक बीज से वे हजारों छोटे अंकुर प्राप्त कर सकते हैं जो कि पेड़ या पौधे बन सकें।

जब उन्होंने कहा कि तुम्हें "स्थित प्रज्ञ" बनना है तो उनका अभिप्राय था कि आपको संतुलन प्राप्त करना होगा। यह उन्होंने तब कहा जब लड़ाई चल रही थी। जब तक तुम्हें लोगों से युद्ध करना पड़े, या उनका वध करना पड़े, तब तो ठीक है, एक बार जब यह कार्य पूरा हो जाये तो आपको अपनी आध्यात्मिक चेतना की रचना करनी होगी।

आध्यात्मिक चेतना की रचना करना हमारा कार्य है और हमें वही करना है। न केवल धर्म। कई सहजयोगी सोचते हैं कि वे धर्म कर रह रहे हैं और धर्म में रहे हैं। मगर यही इसका अन्त नहीं है। यह सन्तुलन का हिस्सा है। आपको आगे जाना है और अपने आध्यात्म की रचना करनी है और इसे फैलाना है। यह श्री कृष्ण का कार्य है क्योंकि वे ही प्रसार करते हैं। आप जानते हैं कि अमेरिका गलत तरीके से हर तरफ प्रसार कर रहा है। हां वह ऐसा कर रहा है। उसके पास कम्पयूटर आदि हैं। प्रसार का हर यंत्र उसने बना लिया है क्योंकि प्रसार करना उनका अन्तर्जात गुण है। परन्तु क्योंकि वे न तो श्री कृष्ण में विश्वास करते हैं, और न ही ध र्म में, अत: उनका आधार ही गलत है। इस गलत आध ार से उन्होंने गलत विचार और गन्दगी को फैलाना शुरु कर दिया जो कि हमारे उत्थान और परमात्मा के विरुद्ध है। पर वे यह सब कर रहे हैं। वे ऐसा क्यों कर रहे हैं जो कि उन्हे करना ही नहीं चाहिए? मैं सोचती हूँ कि यह सब बुद्धि के कारण है। यह बुद्धि मस्तिष्क भी है और विराट की पीठ भी है। इस बुद्धि से वे कहते हैं कि अधार्मिक होना स्वाभाविक है। धन लोलुप और आक्रामक होना भी स्वाभाविक है। जो कुछ भी उनके पास है सब स्वाभाविक है, क्योंकि, उनके अनुसार अपनी बुद्धि से या किसी और तरह से वह आपको तर्क बुद्धि द्वारा यह समझाने में सफल हो गये हैं कि ऐसा करना उचित है, इसके बिना आप जीवित नहीं रह सकते। यह सम्भवत: उनकी संस्कृति है। इस प्रकार की संस्कृति सब जगह है और बुद्धि के कारण स्वीकार की जाती है। वे बहुत ही बुद्धिमान हैं। जो व्यक्ति हमेशा पैसे के बारे में सोचता है बहुत बुद्धिमान बन जाता है। बुद्धिमान बनने का अभिप्राय वह तेज बन जाता है। वह ऐसा चुस्त बन जाता है जैसे सब कुछ जानता हो। वह सोचता है वह सब कुछ जानता है और जो कुछ भी वह करता है वह ठीक है। अपने आचरण को वह सदा ठीक मानता है।

ये पाण्डव जो उसके अन्दर, उसके साथ हैं, ये तत्व जो उसे प्राप्त हैं, इनका उपयोग वह पूर्णत: विनाशकारी और ईश्वर विरोधी उद्देश्यों के लिए करता है। उसे ज्ञान नहीं है क्योंकि उसकी बुद्धि हमेशा उनके धर्म विरोधी कार्यों को भी उचित ठहराती है। उदाहरण के लिए श्री कृष्ण की जीवनी में वे चित्रण करने का प्रयत्न करते हैं कि उनकी पाँच पत्नियां थीं और बाद में 16 पत्नियाँ। वास्तव में ये उनकी शक्तियाँ थीं। बिना समझे कि श्री कृष्ण क्या थे! क्योंकि यह बुद्धि ऐसी महामूर्ख है, कि यह आपको सही विचारों तक नहीं ले जाती है क्योंकि आप हर चीज़ को उचित ठहराते हैं। यह समर्थन आपको अपने जीवन तक सीमित कर देता है। सामान्यत: आप अधार्मिक, आक्रामक, युद्ध-प्रेरक जीवन नहीं जी सकते। यह सभी कुछ इन सभी विरोधी तत्वों की मनुष्य से आशा की जाती है। पाश्चात्य संस्कृति में इन सब को पास-पास रखा जा रहा है। आप इसे स्पष्ट रूप से देख सकते हैं कि किस प्रकार वो अनैतिकता का समर्थन करते हैं।

ईसा मसीह मोहम्मद साहिब से भी कठोर थे। उन्होंने कहा कि यदि कोई आँखों से अपराध करे तो आप उसकी एक आँख निकाल लो। यदि किसी का हाथ अपराध करता है तो हाथ काट दो। ईसा के अनुसार तो अधि कतर यूरोपियन और अमरीकन एक हाथ के होने चाहिएं। मोहम्मद साहिब ने सोचा ईसा ने आदमियों के लिए इतना सब किया। क्यों न औरतों के लिए कुछ किया जाये। औरतों की तरफ देखने का तर्क स्वाभाविक है। क्या आपने किसी पशु को ऐसा करते देखा है यदि पशु प्राकृतिक प्राणी है? वे लोग जानवरों से भी बदतर हैं और इस प्रकार की समझ से हमने कैसी गन्दगी उत्पन्न कर ली है? ये बुद्धिवादी जो भी हमे समझाने का प्रयत्न करते है हम उसे स्वीकार करते हैं।

एक समस्या यह है कि यदि कोई बुद्धिमान व्यक्ति है तो वह प्रभुत्व जमाता है। उदाहरणार्थ जो भी कोई

फैशन शुरु होता है हम सब उसे स्वीकार कर लेते हैं। उद्दमी की बुद्धि आपको वास्तव में पूरी तरह से मूर्ख बना सकती है। मगर उन लोगों को नहीं जो विवेकशील हैं। वे कहेंगे दफा हो जाओ। यह नैतिक भाग के बारे में है। पश्चिम में इसका घोर पतन है। यह पशुओं से भी बदतर है। और इसी कारण वो आज इतनी सारी बिमारियां, परेशानियाँ आदि भुगत रहे हैं।

दूसरी चीज़ जिसका हम हमेशा समर्थन करते हैं ''हिंसा'' है। अब कुरुक्षेत्र में कोई भी लड़ाई नहीं चल रही है, मगर आप हर तरफ हिंसा देख सकते हैं। अमेरिका में इसका भयानक रूप है। यह केवल अमेरिका में ही नहीं, हर जगह है, क्योंकि सबका गुरु अमेरिका है। यह अमेरिका से शुरु होता है और लोग आँखे बन्द करके उसका अनुकरण करने लगते हैं। हिंसा हमारी फिल्मों में आ गई है, किसी को मारने की अनुमति नही हैं। 'आप हत्या नहीं करेंगे।' मुसलमान लोग हत्या कर रहे हैं। सभी हत्या कर रहे हैं। आक्रामकता अन्ततः आप को हत्यारा बना देती है। चींटी तक तो आप बना नहीं सकते, इस तरह मानव की आप कैसे हत्या कर सकते हैं? हत्या का यह व्यवसाय आकाश को छू रहा है। जैसे हिटलर मानता था कि वो विश्व में सबसे ऊँचा है। यह उन्माद है। आप एकदम भूल जाते है कि आप कौन है और अपने अंहकारवश स्वयं को अत्यन्त महान मान बैठते हैं। सहजयोग में भी कुछ लोग हैं जो यह कहते कि वो भगवान हैं, वो देवता हैं। यह अंहकारवाद वास्तव में आपकी बुद्धि से ऊर्जा लेता है। मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु उसकी बुद्धि है क्योंकि यह अत्यन्त सीमित, प्रतिबन्धित, अंहग्रस्त तथा चक्षुविहीन है।

विवेक अलग चीज़ है। विवेक आप अपनी आत्मा के माध्यम से प्राप्त करते हैं। यह आपको उचित अनुचित का पूर्ण ज्ञान देता है। बुद्धि तो गलत बात को भी स्वीकार कर लेगी। बुद्धि विवेक नहीं है। ये दो अलग चीजे हैं। कूटनीतिज्ञ के रूप में कृष्ण प्रसिद्ध हैं। उनकी कूटनीति दिव्य थी। इसका अर्थ यह है कि वो बहुत ही बुद्धिमान थे। मैं कुछ उच्चपदाधिकारियों से मिली हूँ परन्तु उनमें अधिक बुद्धिमत्ता नहीं है। अब मैने देख लिया कि यह बुद्धिमत्ता भयानक वस्तु है। श्री कृष्ण ने अपनी बुद्धि का प्रयोग किया। वे शक्तिशाली हैं। उन पर कुछ भी प्रभुत्व नहीं जमा सकते अन्तर देखिए। आपको अपनी बुद्धि का प्रयोग करना आना चाहिए, इसके वश में नहीं आना चाहिए। उनकी सारी युक्ति उनकी बुद्धि के प्रयोग के लिए थी और उसका उपयोग दैवी उद्देश्य के लिए। हर समय उनके अन्दर का देवत्व बुद्धि प्रयोग में उनकी सहायता करता था। अन्तर यह है कि हम अपनी बुद्धि, बन्धनों, भावनाओं तथा शरीर के दास हैं। स्वामी बनकर आप अपनी बुद्धि को स्पष्ट देखते हैं। यह बुद्धि आपको यह विचार दे सकती है कि आप पूरे विश्व के स्वामी हैं। और वही बुद्धि आपको यह विचार भी दे सकती है कि आप कुछ नहीं है। बुद्धि आपके सिर चढ़ कर बोलती है। सहजयोगी होने के नाते आपको अपनी बुद्धि से नहीं विवेक से संचालित होना है। आपके पास बहुत अच्छा उपकरण है, अपनी चैतन्य लहरियों को अनुभव करके, आप यह पता लगा सकते हैं कि ठीक क्या है और गलत क्या है? आप देख सकते है कि मानव होने के कारण कुछ बुद्धि प्रभाव भी आ रहा है। मगर सहजयोग से आप यह जाँच सकते है कि यह बुद्धि आपको क्या बता रही है। मुख्य बात है कि आपको सूक्ष्म बिन्दु पर अवश्य जाना चाहिए, कि यह बुद्धि हम तक कैसे आई। यह हम तक आई क्योंकि हमारा मस्तिष्क बहुत जल्दी सक्रिय हो जाता है। मैंने कुछ अत्याधिक बुद्धिमान बच्चों को देखा है पर उनमें विवेक नहीं है, मस्तिष्क का कुछ अधिक विकसित होना, माता-पिता के अधिक बुद्धिमान होने के कारण हो सकता है। उत्तराधिकार में बच्चों को तीक्ष्ण बुद्धि मिल सकती है। परिस्थितियों के कारण भी ऐसा हो सकता है। जैसे हो सकता है कि आप एक विशेष देश में पैदा हुए हो, जहाँ अचानक आप बहुत बुद्धिमान बन जाते हैं। मेरे पास कुछ अमेरिकन और अंग्रेज हैं जो हर समय पढ़ते रहते हैं। मगर इस सब पढ़ाई का फल क्या है? वे हर किताब .पढ़ेंगे। वे कम्पयूटर के बारे में सब कुछ जानते हैं। यह सब अविद्या है। यह ज्ञान नहीं है। यह अज्ञान है। तो वे सोचते हैं कि वे बहुत बुद्धिमान है क्योंकि वे हर वस्तु के बारे में, हर चीज़ जानते हैं।

इस बुद्धि से जैसे चेतना आने लगती हैं वे बहुत ही बौद्धिक विचार बनाने लगते हैं। विशेषतया अमरीका में। उनके पास हर प्रकार की अजीबो-गरीब चीजे हैं। केवल पैसा खींचने के लिए। उदाहरण के लिए उनके पास एक हौआ (Golliwog) है जिसका जन्मदिन होता है। कई बार लोग उनके लिए बड़े समारोह भी करते हैं। फिर वे कुत्तों का जन्मदिन मनाने लगे। कोई भी जो विचार उनमें डाल देता है उसे वे करने लगते हैं। फिर वहां पर संगठन है जो कहते हैं कि जब आप मरने वाले हों तो हमें बता दें कि आप कौन सा सूट

पहनना पसन्द करेंगे। आपको कैसा ताबूत चाहिए। यूरोप में सबसे बेकार चीज़ यह है कि उन्होने अवकाश मनाने के विचार को बहुत अच्छे से विज्ञापित और व्यापारित किया हैं। अत: इटली में यदि व्यक्ति अवकाश पर नहीं जाता तो कहेगा कि मेरे जीवन में संकट आ गया है क्योंकि मैं अवकाश (छुट्टी) पर नहीं जा सका। फिर उन्होने कहा तुम वहाँ जाओ, शरीर को धूप में जलाओ, होटल में रहो। हर किसी को बाहर जाना है। वे सभी समुद्रतटों को गन्दा कर रहे हैं। समुद्र जो उनके पिता हैं, के लिए उनमें कोई आदर नहीं है। उनमें एक दूसरे के लिए कोई आदर नहीं है। औरते पतला होना चाहती हैं और बहुत अच्छा दिखना चाहती हैं ताकि वे वहाँ जाकर नग्न हो सकें। सारा तन्त्र ही खराब है। यदि आप बुद्धिमान हैं तो मूर्खतापूर्ण विचार किस प्रकार स्वीकार कर सकते हैं।

सहज अर्थशास्त्र (economics) बहुत अलग है। अर्थशास्त्र के रूप में प्रचलित मूर्खतापूर्ण विचारों से हम बन्धे हुए नहीं है। शोषण के अतिरिक्त यह कुछ भी नहीं यह व्यापारीकरण है। यह लोगों को प्रभावित करना, वस्तुएं बेचना आदि है। आर्थिक आक्रामकता के अतिरिक्त यह कुछ भी नहीं।

श्री कृष्ण राजा थे। वे राजा की तरह रहे मगर गोकुल में वे बहुत ही साधारण घर में भी रहे। वे लिप्साविहीन थे। पर पश्चिमी देशों के लोगों में धन-लिप्सा सर्वप्रथम है। धन प्राप्ति के लिए कोई भी तरीका अपनाना वे उचित मानते हैं।

एक बार भारत में हम एक होटल में गये। हमारे साथ कुछ अमेरीकी मित्र थे। उन्होने बहुत खाया और खा रहे थे मगर हम उनका मुकाबला नहीं कर पाये। उन्होंने बैरा को बुलाया और बचा हुआ खाना बाँधने को कहा क्योंकि उन्होंने उसकी कीमत दी है। और उन्हें ऐसा करने में शर्म नहीं आई। मैने कहा हम भारत में ऐसा नहीं करते, क्योंकि यह अशिष्टता है। वे कहने लगे कि हमने इसके लिए पैसा खर्चा है। सहज योग में आप कंजूस नहीं हो सकते। दूसरों के लिए आपको सोचना पड़ेगा। केवल यही तरीका है जिससे हम अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त कर सकते हैं। यह सब उदारता आपको बहुत बड़ा नायक बनाने के लिए नहीं है।

परन्तु सबसे बुरा हालीवुड है। यह फिल्म उद्योग है। उद्योग के नाम पर आप कुछ भी कर सकते हैं। यहँ हालीवुड अत्यन्त गन्दी फिल्में बना रहा है। सबसे बुरी बात तो यह है कि महागन्दी फिल्मों के लिए उन्हें इनाम दिए जाते हैं। एक फिल्म में एक नरभक्षी मांस खाते है और उसे देखकर दर्शक आनन्दित होते हैं। इस फिल्म को सर्वोत्तम फिल्म तथा इसके नायक को सर्वोत्तम अभिनेता का इनाम दिया गया। वे कुछ ऐसी फिल्में बना रहे हैं जिनमें वे लटके हुए मृत शरीर दिखाते हैं। ये लोग इतनी भयानक चीज़ें क्यों देखना चाहते हैं? उनका चरित्र क्या है? वे कहां तक पतित हो चुके हैं? मानव को आनन्द न दे सकने योग्य चीज़ों का भी वे क्यों आनन्द लेते हैं?

हृदयाभिव्यक्ति प्रथम सिद्धांत है। किस प्रकार आप अपनी बात दूसरों से कहते हैं? अपने बच्चों, पति, पत्नी से इसका आरम्भ करें। खोजने का प्रयत्न करें कि कहीं आप रोबीले तथा आक्रामक तो नहीं। स्त्रियों या पुरुषों की आक्रामकता किसी भी सीमा तक जा सकती है। परन्तु यहां पर स्त्रियाँ बहुत आगे हैं। भारत के पुरुष अत्यन्त रोबीले हैं। मूलभूत बात यह है कि अच्छे वस्त्र धारण करने के अतिरिक्त मनुष्य में अच्छे तौर तरीके भी होने चाहिए। उनके तौर तरीके वेषभूषा तक ही सीमित हैं। परन्तु जब भी वे परस्पर मिलते हैं लोक निन्दा ही करते हैं। व्यक्ति को समझना चाहिए कि श्रीकृष्ण ने कभी निन्दा नहीं की। यह यूरोप के देश पूरे विश्व के घोटालो से क्यों सुसज्जित हैं। इन घोटालों में लोगों की, और सर्वोपरि, समाचार पत्रों की क्या दिलचस्पी है? इनसे धनार्जन ही इसका कारण है। यह सारा साँठ-गाँठ पूर्ण व्यापार है। लोग यह सारी मूर्खतापूर्ण बातें सुनना चाहते हैं अत: समाचार पत्रों में यह छपती हैं। तीस वर्ष पूर्व आपको ऐसा कुछ सुनने को न मिलता था। इस प्रकार की सभी पुस्तकों पर पूर्णतया: रोक थी। परन्तु अचानक ही यह सारी चीजे कुसुमित हो चुकी हैं। और कोई भी पत्रिका या पुस्तक जब आप पढते हैं तो हतबुद्ध रह जाते हैं। कि इनमें क्या सिखाया ज़ा रहा है। विनाश संस्कृति सिखा रहे हैं। लोग इसे स्वीकार करते है, पसन्द करते हैं और कार्यान्वित करते हैं। महिलाओं का उपयोग स्वार्थ सिद्धि के लिए किया जाता है और मूर्खतावश महिलाएँ भी इसे स्वीकार कर लेती हैं। निसन्देह एक ओर तो उनका प्राबल्य है और इसके कारण उन्हें बहुत प्रसन्नता होती है। एक पत्रिका में एक महिला डींग हांक रही थी कि जीवन में उसके सम्बन्ध चार सौ पुरुषों से रहे। नर्क में भी ऐसी स्त्रियों के लिए स्थान नहीं है। ऐसी महिलाओं को आप कौन सा स्थान देंगे? यह गतिविधि धर्म तथा संचारण सिद्धान्त के बिल्कुल विपरीत है।

बातचीत करने का आपका क्या तरीका होना चाहिए? अन्य सहजयोगियों तथा अन्य लोगों से अत्यन्त सभ्य, मृदु तथा सुन्दर तरीके से आपको बातचीत करनी है। आपको दूसरे व्यक्ति से बहुत ही मधुरतापूर्वक बात करनी चाहिए। फ्रेंच लोगो की तरह बनावटी तरीके से नहीं। आपको शिष्ट भाषा में नम्रता पूर्वक बोलना चाहिए। हर समय बड़बड़ाने और बहुत अधिक बोलने की आवश्यकता नहीं है। माधुर्य श्री कृष्ण की शक्ति थी। यह शहद की तरह मधुरता देती है। आपको इस तरह बोलना चाहिए जो दूसरे व्यक्ति को अच्छा लगे। किसी से भी बात करते समय आप बहुत मधुरता तथा अच्छे तरीके से बात कर सकते हैं जो दूसरे व्यक्ति को अच्छा लगे। उकसाने के लिए कठोर बाते न करें। कुछ लोग आदतवश हर समय उकासने की बात कहते हैं। ऐसा करना अच्छा नहीं है।

व्यापार के लिए कुछ लोग तो मधुर बन जाते हैं। अन्यथा अत्यन्त कठोर हैं। भारत में हमारे यहाँ जन समुदाय है। व्यापार के लिए वे अत्यन्त मधुर है, मगर दान आदि करने में वे अत्यन्त कठोर हैं।

श्री कृष्ण इसके बिल्कुल विपरीत थे। अपने जीवन में वे सदा दासीपुत्र विदुर के अतिथि रहे, क्योंकि वह आत्मसाक्षात्कारी था। कृष्ण विदुर के साधारण निवास में रहा करते थे और बहुत ही साधारण भोजन खाते, मगर वे दुर्योधन के महल में नहीं जाते थे। श्री कृष्ण ने कभी धन की परवाह नहीं की और न ही उसके बारे में सोचा। उन्होने अपनी गद्दी, राज्य या उसके वैभव के प्रति पूरी निर्लिप्तता दिखाई। लिप्त होते ही धन ग्रस्त सभी कष्ट आपको सहने पड़ते हैं। यदि आप निर्लिप्त हैं तो वही धन आप उपयोग कर सकते हैं। एक बार आप उस पैसे के दास बन जाते हैं तो वह आपके सिर चढ़ जाता है। आजकल पैसा होना भी खतरनाक है। सारी प्रतिक्रिया हो रही है और इसी कारण सारे तत्व आपके खिलाफ प्रतिक्रिया कर रहे हैं। सिएरा निवेदा के लोगो ने सच कह है, जब हम धन संचय करने लगते हैं तो करते ही चले जाते हैं, पर लुटेरें भी साथ साथ आ जाते हैं।

उद्योगपति कहलाने वाले लोग सबसे निकृष्ट है। उदाहरण के लिए वे पूछेंगे कि आपके पास डिजाइनर घड़ी है? तो सभी लोग उस डिजाइनर घड़ी को मांगेंगे। श्री कृष्ण को देखें, कितने बुद्धिमान तथा साक्षी भाव हैं। कैसे प्रकाश लीला करते हुए वे विजयी होते हैं। यदि वे लिप्त होते तो वे ऐसा न कर पाते। इस प्रवृत्ति से छुटकारा पाने के लिए आपको कृष्ण विरोधी इस संस्कृति से छुटकारा पाना होगा।

''यह फैशन है, वह फैशन है।'' यह सब फैशन बेहद विनाशकारी है। सिर में तेल नहीं डालना, जिसका अंत गंजापन होना है। उन्होने जो भी किया वो दुष्टता और नकारात्मकता को समाप्त करने के लिए और आनन्द सामने लाने के लिए, यही रास है। रास आपके अन्दर की शक्ति है। जिससे आप क्रीड़ा करते हैं और आनन्द उठाते हैं। श्री राम के जीवन में जिस चीज़ का अभाव था उस आनन्द की लीलामय ढंग से अभिव्यक्ति करने के लिए उन्होंने विवेकशील होली प्रचलित की। उन्होंने कहा, ''स्वयं को आनन्द लेने दो।'' मगर यह बात केवल सहजयोगियों के लिए थी अन्य लोगो के लिए नहीं। अन्य लोग तो मधुशालाओं में चले जाते है। श्री कृष्ण ने कहा और किया कि हम हर चीज़ का आन्नद ले सकते हैं। हमे अधार्मिक नहीं होना है। धर्म आपको आनन्द प्रदान करता है। धर्म यदि आनन्द प्रदान नहीं करता तो आप पूरी तरह से तपस्वी तथा नीरस व्यक्ति बन जाते हैं। और यह नीरसता कभी-कभी मूर्खता की सीमा तक चली जाती है। यह आनन्द आप अन्य लोगों में बांटते हैं। आनन्दमय स्वभाव के बिना आप संचरण नहीं कर सकते।

वह विराट है जो आपके दिमाग में प्रकाश डालते हैं। इस प्रकाश में आप देखते हैं कि क्या बेकार और मूर्खतापूर्ण है। यह श्री कृष्ण का आर्शीवाद है। वे आपको निरानन्द देते हैं क्योंकि यदि आपके पास प्रकाश नहीं है तो आप अपने मस्तिष्क का आन्नद नहीं ले सकते। उनके प्रकाश में हम स्वयं को आनन्द से परिपूर्ण देखते हैं।

एक और फैशन यह कहता है, ''यह बहुत अधिक है।'' दिमाग मूर्खता से भरा होने के कारण आप उनको जो कुछ भी बतायें उनके दिमाग में कुछ भी नहीं जाता है। एक बुद्धिमान व्यक्ति, जैसे श्री कृष्ण विवेक का स्त्रोत हैं, को ''स्थित-प्रज्ञ'' होना चाहिए, अर्थात् उसे संतुलन में, धर्म में और सर्वोपरि आनन्द में होना चाहिए। आप केवल आनन्द में नहीं है मगर आप सत्य को जानते हैं, पूर्ण सत्य को। यह पूर्ण सत्य वह है जो आपको यह समझ देता है कि क्या सही है और गलत है और आप अपना विवेक, विकसित कर लेते हैं, अपनी बुद्धि नहीं। आप अपनी बुद्धि को दुराचरण करते हुए, आपको नकारात्मक एवं आक्रामक विचार देते हुए देख सकते

हैं। आप साक्षी बन सकते हैं। श्री कृष्ण ने कहा था "मै पूरे विश्व का साक्षी हूँ।"

हमें यह देखना है कि हम कहाँ गलती कर रहे हैं और श्री कृष्ण कैसे हमें बचा सकते हैं। यह दिन-प्रतिदिन विवेकशील बनने से होगा। विवेक आपको निश्चित विचार देता है कि आपको कैसा बनना है। आपके पास वैसी ही मुस्कराहट होगी जैसी श्री कृष्ण के पास थी। हमें यह समझना है कि हमारी विशुद्धि ठीक रहे। अमेरिका को ठीक करने के लिए मेरी विशुद्धि पकड़ जाती है। इसके बिना मेरी विशुद्धि कभी ठीक नहीं हो सकती। विशुद्धि ठीक करने के लिए हमारे पास सहजयोग में बहुत सी विधियाँ हैं जिन्हें बहुत कम लोग करते हैं। यदि कुछ थोड़े से सहजयोगी ही अपनी विशुद्धि को ठीक रख सकें तो मैं बहुत बेहतर हो जाऊगीं।

परमात्मा द्वारा आर्शीवादित आप एक नई जाति हैं, आपके अन्दर अपने गौरव और प्रकाश में जागृत श्री कृष्ण है। मगर मैं क्या देखती हूँ कि लोग ध्यान भी नहीं करते हैं। यदि वे ध्यान करते हैं तो वे बातचीत नहीं करना चाहते। कई बार जब वो बातचीत करते हैं तो वे सोचते हैं कि वो भगवान बन गये हैं। सम्भाल की दृष्टि से मानव बहुत ही कठिन वस्तु है। श्री कृष्ण की तरह आपको पूरी नम्रता से बातचीत करनी चाहिए। रास में उन्होने राधा की शक्ति सब लोगो में हाथ पकड़ कर फैलाई। उनका बचपन, जहाँ उन्होने बहुत से दुष्टों को मारा, पूरा हो गया है। व्यस्क होने पर भी उन्हें अपने मामा को मारना पड़ा, वह भी हो गया।

राजा बनकर वे क्या कार्य करें? यह समय संचार के लिए था। राजा बनने के बाद ही उनके अधिकतर गुण प्रकट हुए। इससे पहले तो वे एक के बाद दूसरे राक्षस को मारने में व्यस्त थे। उसंके बाद उन्होने द्वारका बनाई और लोगों से बातचीत का प्रयत्न किया। आपका कर्तव्य स्वयं को बनाना है और दूसरों के साथ श्री कृष्ण सम मधुरता से बातचीत करना है। पूरी समझ के साथ की क्या बेकार चीज़ें आस-पास हो रहीं हैं। एक बार जब आप यह समझ लेंगे तो उसे नहीं करेंगे। आप बहुत ही बुद्धिमान बन जायेंगे। उन चीज़ों को जो चल रही हैं आप नहीं लेंगे। अगर आप साक्षी बन जायें तो आप देखेंगे क्या हो रहा है। हमें लोगों को नर्क में जाने से रोकना होगा। हमें एक वास्तविक सहज योगी का व्यक्तित्व विकसित करना है।

बहुत से विवाह होते हैं जो अचानक तलाक तक पहुंच जाते हैं। तलाक की सहजयोग में अनुमति है मगर यह अमेरीकी तरीके की बेवकूफी नहीं। पति या पत्नि कोई भी रौब जमा रहा होता है। और तलाक हो जाता है। उपलब्धि क्या है? हमें स्वयं में हर चीज़ को कार्यान्वित करता है क्योंकि हम बन्धन ग्रस्त हैं और हम एक व्यर्थ प्रकार के वातावरण में हैं। मैं आप सबको विनती करती हूँ कि आप श्री कृष्ण के व्यक्तित्व की सुक्ष्मता को समझने का प्रयत्न करें। बहुत ही शांतिप्रय, करुण मृदु तथा सहायक बनने का प्रयत्न करें। उनमें धन की चेतना न थी। किसी कारण विशेष से उनका मेघ वर्ण था। देखने का प्रयत्न करें कि वर्णित गुणों में से कितने गुण हममें हैं। इस प्रकार से अर्न्तदर्शन शुरु होगा। एक बार जब आपने अर्न्तदर्शन और स्वयं को समझना शुरु किया तो विवेक बढ़ेगा। दूसरों की गलतियाँ देखने या उन पर आँखे उठाने से नहीं, अपितु स्वयं को देखने से। इस प्रकार से कार्य होंगे। कृष्ण को यह नहीं करना पड़ा क्योंकि वे सम्पूर्ण थे। सम्पूर्णता प्राप्त करने के लिए हमें यह सब करना पड़ेगा।

एक अन्य बात मैं सहजयोगियों के बारे में बताना चाहती हूँ, हमने भारतीय शास्त्रीय संगीत आप लोगों में इसलिए चलाया है क्योंकि इससे चैतन्य लहरियां बढ़ जाती हैं। मगर पश्चिमी लोग स्वभाव वश जो भी कार्य करने लगते हैं वे उसकी तह में तब तक जाते हैं जब तक पूरी तरह से खो न जायें। मै हैरान हूं कि कैसे लोग संगीत में खो जाते हैं। कोई उत्सव अवश्य होना चाहिए। संगीत के साथ वे सब पहले ही दूसरी दुनिया में हैं। यह सब मत करो। आप हर चीज़ की अति में चले जाते हैं। यह ठीक नहीं है। पूजा में भी, आप अति में चले जाते हैं। अति में जाने पर आप मध्य में नहीं रहेंगे, आप श्री कृष्ण के स्थान में नहीं रहेंगे।

आदत के कारण हम इस प्रकार के संसार की सृष्टि करते हैं। किसी के पास संगीत का संसार है, किसी के पास नृत्य का, अन्य के पास ऐसा संसार है जहाँ वे स्वयं का कोई अन्त नहीं देखते हैं। "हमारा श्री माता जी से विशेष सम्बन्ध है।" यह बहुत सामान्य बात है मेरा कोई विशेष सम्बन्ध नहीं हो सकता। किसी का भी मेरे साथ कोई विशेष सम्बन्ध नहीं है। यह मैं आपको बहुत साफ तरीके से बताना चाहूँगी। आपको इसका दावा नहीं करना चाहिए।

परमात्मा आपको आर्शीवाद दें।

●●

श्री गणेश पूजा

परम पूज्य माता जी श्री निर्मला देवी का प्रवचन (सारांश)

मास्को- 11-9-1994

श्री गणेश का निवास मूलाधार चक्र में है, मूलाधार पर नहीं। मूलाधार पर कुण्डलिनी का स्थान है। वे श्री गणेश की मां है जिन्हें हम गौरी कहते है। अब हम मानव चेतना के उस पड़ाव पर है जिसे चौथा आयाम कहतें है। श्री गणेश के बिना यह असम्भव है क्योंकि वे हमारे अन्दर अबोधिता (पावित्र्य) के प्रतीक हैं। शाश्वत होने के कारण यह अबोधिता कभी नष्ट नहीं होती, परन्तु हमारी गलतियों के कारण यह अच्छादित हो सकती है। आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने के पश्चात् आपकी अबोधिता पुन: स्थापित हो कर प्रकट होने लगती है। आप पवित्र हो जाते है, आपका चित्त पवित्र हो जाता है।

बिना आत्मसाक्षात्कार का प्रकाश प्राप्त किये आप किसी भी कर्म को नहीं अपना सकते चाहे वह धर्म ईसा, मोहम्मद साहिब का हो या यहूदियों का। उच्च स्तर का होने के कारण ये पैगम्बर इस बात को महसूस न कर सकें कि मानव की स्थिति क्या है?

बाइबल में लिखा है कि यदि आपकी आँख अपराध करती है, अर्थात श्री गणेश के विरुद्ध जाती है तो आप इसे निकाल दें या यदि आपका दायां हाथ श्री गणेश विरोधी कोई कार्य करता है तो आप इसे काट डालें। मोज़ज़ जब दस ध र्मादेश लेके आये तो उन्हें यह लगा कि यहूदी समाज, आजकल की तरह अत्यन्त पतित है। चरित्र का पूर्ण अभाव है। सहज ही एक मात्र मार्ग है जिसके द्वारा मानव पवित्र हो सकता है। श्री गणेश ही हमारे अन्दर आत्मा रूप है और वे पृथ्वी पर भगवान ईसा-मसीह के रूप में अवतरित हुए। परन्तु इतने महान अवतरणों के विरुद्ध बहुत सी उल्टी सीधी बाते हुईं और लोगों ने अपने- अपने सम्प्रदाय बना लिये। कोई भी धर्म-ग्रंथ अन्य धर्म ग्रंथो से भिन्न नहीं है। उदाहरणतया मोहम्मद साहिब ने मोज़ज़, ईसा की माँ का वर्णन किया है। अत: उन्होंने किसी भिन्न धर्म की स्थापना नही की। उन्होंने बताया कि सारे धर्म परस्पर गुंथे हुए हैं। परन्तु आज लोग ये नहीं मानते कि सभी धर्मो की उत्पत्ति आध्यात्मिकता के एक ही वृक्ष से हुई। वे केवल दूसरों से ही नहीं लड़ रहे परस्पर भी लड़ रहें हैं। परमात्मा के नाम पर वे निरीह लोगो की हत्यायें कर रहे है।

अबोधिता प्रेम का स्त्रोत है। जब आप नन्हें बच्चों को मधुरतापूर्वक नाचते हुए देखते है तो आपके हृदय में उनके प्रति अगाढ़ प्रेम उमड़ता है। किसी बच्चे को यदि अपनी तरफ प्रेम से मुस्कराता हुआ आप देखते है तो उसके लिए आपके हृदय से प्रेम धारा बह निकलती है। पावित्र्य का सम्मान किये बिना आप कभी प्रेममय नहीं हो सकते।

प्रेम के बिना आप सत्य को नहीं जान सकते। परन्तु अबोध लोगों को प्रेम करने में कभी हम हिचकिचातें है और कभी हम घबराते हैं। अबोध व्यक्ति किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचाते। माता पिता का बच्चों को पीटना मुझे बिल्कुल पसन्द नहीं। बच्चे अपनी अबोधिता में सभी कुछ करते है अत: आपको चाहिए कि करुणा भाव से उन्हें समझें।

आज रूस में बहुत से जन्मजात आत्मसाक्षात्कारी बच्चे है, आप सब क्योंकि आत्मसाक्षात्कारी है इस लिए बहुत से सन्त आपके यहां जन्म लेना चाहते हैं। परन्तु आपको स्वंय भी अबोध होना होगा। जिन देशों में बच्चों का सम्मान नहीं होता वहां बच्चे जन्म नहीं लेना चाहते। उन देशो में ऋणात्मक (पतनोन्मुख) विकास है। परन्तु भारत जैसे देश में जहाँ बच्चों को बहुत प्यार किया जाता है, गरीबी होते हुए भी वहाँ बच्चे जन्म लेना चाहते है। बच्चे धन या भौतिक वस्तुओं को नहीं जानते वे प्यार को समझते हैं, यदि आपमे प्रेम नहीं है तो आप में श्री गणेश का प्रकाश नहीं हो सकता।

जो माँ अपने बच्चे को प्रेम करती है, वह बच्चे के लिए किये जाने वाले हर कार्य का आनन्द लेती है। परन्तु बच्चे को प्रेम न करने वाली माँ को लगता है कि उस पर बहुत बोझ पड़ गया है। उससे यदि आप कारण पूछें तो वह कहेगी कि मुझे यह धोना है, यह साफ करना है, इस बच्चे की देखभाल करनी है आदि कहानियाँ। परन्तु आत्म साक्षात्कारी माँ यह सब करने का आनन्द लेगी। वह बच्चों का सम्मान करेगी और उन्हें भी अपना सम्मान करना सिखाएगी। अपने बच्चों के प्रति कठोर होने की कोई आवश्यकता नहीं। बच्चे अत्यन्त संवेदनशील और विवेकशील होते हैं। सैकड़ों में से हो सकता है कि कोई एक बच्चा आपको खराब मिले। परन्तु बाद में अपने बड़ो से, विशेषकर माता-पिता और वातावरण से, सीखकर वे कष्टप्रद हो जाते हैं। इसका अभिप्राय यह नहीं है कि आप अपने बच्चों को अनुशासित न करें, रोकें नहीं, या उन्हें सिखाएँ नहीं। स्वंय पवित्र और धार्मिक बनना सर्वोत्तम है।

गणेश नैतिकता का आधार हैं। जिस समाज में नैतिकता समाप्त हो जाए वह नष्ट हो जाता है चाहे उसमें जितना भी आर्थिक, धन सम्बन्धी या राजनैतिक बहुतायत हो। वे अन्दर

से नष्ट हो जाते हैं। उदाहरण के रूप में आप अमेरिका को लें जो कि अत्यन्त वैभवशाली देश है, वहां क्या हो रहा है? 12 वर्ष के छोटे-छोटे बच्चे हत्याएँ करते हैं और नशीली दवाएं बेचते हैं। पश्चिम के किसी अन्य देश में माता-पिता ही बहुत से बच्चों की हत्या कर देते हैं। जितने भी समृद्ध देश है उन सब में कुछ विशेष प्रकार की अनैतिकता है, वे अत्यन्त हिंसक एवं अहम् ग्रस्त हैं। अबोधिता अहम् का समाधान कर देती है। बच्चे से जब आप बात करते हैं तो उनकी मधुर तथा विवेकशील बातों को सुनकर आप आश्चर्यचकित रह जाते हैं। वे अत्यन्त स्नेह एवं करुणामय हैं।

श्री गणेश एवं कार्तिकेय को एक बार उनके पिता ने कहा आप दोनों में से जो भी पहले पृथ्वी मां की परिक्रमा कर लेगा उसे इनाम मिलेगा। श्री गणेश ने सोचा कि कार्तिकेय तो अपने मोर पर बैठकर तेजी से जा सकते हैं। पर मुझे तो चूहे पर जाना है, मेरा क्या होगा? परन्तु वे क्योंकि विवेक के स्त्रोत है अत: विवेकपूर्वक उन्होने सोचा कि "मेरी माँ पृथ्वी माँ से भी महान है।" अत: उन्होंने अपनी माँ की तीन बार परिक्रमा कर ली और वह इनाम उन्हें मिल गया। अबोध व्यक्ति अत्यन्त नम्र होता है, वह दिखावा नहीं करता। उदाहरण के रूप में श्री गणेश का वाहन चूहा है। परन्तु दिखावा करने वाले लोग बड़े-बड़े ऋण लेकर अपनी सामर्थ्य से परे मंहगी कारें खरीदते हैं। यह अपवित्र लोगों की बीमारी है और लोग इसका अनुचित लाभ उठाते हैं। पश्चिमी देशों में रूप रेखा बनाने वाले लोग हैं। वे हर चीज़ पर अपनी मोहर लगा देते है और इसके लिए सभी को बहुत अधिक धन खर्च करना पड़ता है। यहाँ तक कि लोग अपने कोट पर भी रूप रेखाकार के नाम का प्रदर्शन करते हैं। अत: दिखावा करने वाले इन लोगो का उद्यमी पूरा पूरा लाभ उठाते है। अबोध व्यक्ति अपने शरीर की, नये फैशन की या शरीर प्रसाधनों की अधिक चिंता नहीं करता।

श्री गणेश ही धर्म की नींव है। आप बच्चो को देखे, वे नहीं जानते कि झूठ किस प्रकार बोलना है। कभी-कभी तो वे ऐसी बातें कह देते हैं जो बहुत ही परेशान करने वाली होती हैं। माँ ने पिताजी से कहा कि आज जो व्यक्ति शाम को आ रहा है वह सूअर की तरह से खाता है। इस बच्चे ने ये बात सुनी थी और जब वह व्यक्ति आया तो उसे खाना खाते हुए देखकर वह बच्चा कह उठा, "माँ, वह तो सूअर की तरह से नहीं खाता, आप क्यों कहतीं है कि वह सूअर की तरह खाता है। आपको झूठ नही बोलना चाहिए।" और माँ को बहुत परेशानी का सामना करना पड़ता है। अपनी अबोधिता द्वारा एक अबोध व्यक्ति अन्य लोगों की आलोचना और उन पर टिप्पणियों को कम कर देता है, क्योंकि एक पवित्र व्यक्ति वह चीज़े नहीं देख सकता जो एक चरित्रहीन देख सकता है। एक बार मेरी नात्नि ने तैराकी वेशभूषा पहने हुए एक स्त्री का फोटो देखा। वह उस फोटो से कहने लगी, "जा कर अच्छी तरह से कपड़े पहनो नहीं तो मेरी नानी तुम पर बिगड़ेगीं।" अत: जब आप इन छोटे बच्चों को बातें करते हुए, बर्ताव करते हुए देखते हैं कि वे कितने अबोध हैं, तो आप वास्तव में आनन्द लेते हैं क्योंकि अबोधिता ही प्रेम एवं आनन्द का स्त्रोत है। प्रेम विहीन जब आप किसी चीज़ का आनन्द नहीं ले सकते तब आप उसकी आलोचना करने लगते हैं, उसके विषय में निर्णय देने लगते है और व्यर्थ की बातों में समय नष्ट करने लगते हैं। जैसे उस दिन जब मैं अति सुन्दर संगीत को सुन रही थी तो मैनें अपनी आखें बन्द कर लीं। संगीत वास्तव में अच्छा था और मैं इसमें खो गई। परन्तु कुछ महिलाएं संगीतकार की वेषभूषा पर और उनके हाथ चलाने की शैली पर टिप्पणियां कर रहीं थी, वे इन सब छिछली चीज़ों को देख रहीं थी परन्तु तत्व पर उनका ध्यान न था। अबोधिता तत्व को ग्रहण करती है और तत्व ही प्रेम है। अत: हमें गणेश जी की इस विशेषता को समझना है और इसे अपने अन्दर उतारना है।

उनका पावित्र्य 'जो हमारे अन्दर विद्यमान है' का प्रकटीकरण होना चाहिए, मैं किसी सहजयोगी के घर पर थी जहां लगभग 23 लोगो की एक सभा समाप्त हुई, मैं सबके जाने की प्रतीक्षा कर रही थी। वह सहजयोगी रसोई में था जब वे सब लोग चले गए तो वे भागता हुआ आया और कहने लगा, "माँ ये आपने क्या किया? सब लोग कहाँ चले गए? मैने सबके लिए खाना बनाया है।" उसकी आँखों में आँसू आ गए। उसकी उदारता और करुणा को देखकर मैं अभिभूत हो उठी। अबोधिता में जब उदारता की जाए तो आपको पता भी नहीं होता कि आप क्या कर रहे हैं। आप केवल अपनी उदारता का अनन्द लेते हैं और दूसरे व्यक्ति कि प्रतिक्रिया को देखने की चिंता भी नहीं करते।

हमारे शास्त्रो में ऐसे बहुत से लोगों का वर्णन मिलता है, जैसे श्री राम। वे जंगलों में गए जहाँ एक वृद्ध, दन्तविहीन शबरी नामक महिला उन्हें मिली उसने श्रीराम को कुछ बेर भेंट किए और निश्चलतापूर्वक कहा कि मैंने यह सब बेर चखे हैं और केवल मीठे बेर आपके लिए रखे हैं। भारत में प्राय: लोग दूसरे की मुँह लगाई चीज़ नहीं खाते पर श्री राम ने ये बेर खाये। परन्तु लक्ष्मण जी बहुत बिगड़े। शबरी जब श्री राम के मुँह में बेर दे रही थी तो लक्ष्मण का क्रोध और बढ़ गया। श्री राम ने कहा "इतने अच्छे फल मैंने अपने जीवन में कभी नहीं खाए।" उनकी पत्नी सीता ने भी बेरों का आनन्द लिया। तब लक्ष्मण ने भी वे फल मांगे। शबरी से फल लेकर उनका आनन्द लिया।

कभी-कभी हम अबोध बच्चों से बहुत अधिक लिप्त होने की गलती करते हैं। हम उन्हें बहुत अधिक महत्व दे

देते हैं। अबोधिता बहती हुई नदी की तरह से है। एक ही जगह पर रोकने से जैसे पानी सड़ जाता है इसी प्रकार बहुत अधिक लाड़ प्यार से बच्चे बिगड़ जाते है। बच्चों का सम्मान अवश्य होना चाहिए परन्तु अवांछित महत्व उन्हें नहीं दिया जाना चाहिए। सभी बच्चे एक से हैं। उनके भिन्न पक्ष हो सकते हैं। सर्वप्रथम वे कभी ऊबते नहीं। आप यदि अबोध है तो आप कभी नहीं ऊबेगें। सदा आप सौन्दर्य को देखेंगे। अकेले होने की स्थिति में भी आप आनन्द मग्न होंगे। केवल बड़े व्यक्ति ही ऊब जाते है। मान लो आप हवाई अड्डे पर हैं और आपका वायुयान देर से जाना है तो सभी बड़े व्यक्ति परेशान हो जाएगें परन्तु बच्चे खेलने की कोई सीढ़ी आदि ढूंढ कर आनन्द लेने लगेंगे। हर चीज़ को एक विशिष्ट परिभाषा में बाँध कर बच्चे स्वयं को दु:खी नहीं करना चाहते। मैने बड़े लोगो को हवाई अड्डे पर अत्यन्त ऊबे हुए देखा है परन्तु बच्चे इधर-उधर दौड़ते हुए तथा अन्य बच्चों से मित्रता करते हुए दिखाई देते हैं। केवल अबोधिता द्वारा ही आप अपने सीमित विचारों से ऊपर उठ सकते हैं। मैने अत्यन्त जाति बन्धनों में बंधे माता-पिता देखे हैं पर उनके बच्चे पलक झपकते ही अन्य लोगों से मित्रता कर लेते हैं। केवल अबोध व्यक्ति ही ऐसा कर सकता है। बिना रंग, चेहरे और बालो कि चिंता किये अबोध व्यक्ति किसी का भी मित्र हो सकता है। ये सारी बातें उसके लिए अर्थहीन है, सतही हैं। इन व्यर्थ की चीज़ों की बच्चे चिंता नहीं करते, वे केवल व्यक्ति का हृदय देखते हैं। उसका हृदय यदि प्रेममय है तो जाति, धर्म आदि की चिन्ता किये बिना बच्चे उसकी ओर दौड़ते हैं।

अबोधिता अहम् को समाप्त कर देती है। अबोध व्यक्ति आक्रमक नहीं हो सकता। आक्रामकता यदि है तो यह अत्यन्त स्नेहमयी आक्रामकता होगी। जैसे एक बच्चा कहेगा, "आप मेरें कपड़े इस बच्चे को क्यों नहीं दे देते?" आप कहेंगे "हे परमात्मा! मैने इन पर इतने सारे पैसे खर्च किये हैं और तुम सब वस्त्र दे डालना चाहते हो?" वह कहेगा "ठीक है आप मेरे लिए एक बार फिर खरीद लेना परन्तु अभी इस बच्चे को मेरे वस्त्र दे दो।" अबोध बच्चो में स्वामित्व की भावना नहीं होती। अपनी वस्तुओं को दूसरे के साथ बाँट लेने में वे आनाकानी नहीं करते। परन्तु यदि उन्हें ये सिखाया गया कि "यह वस्तु तुम्हारी है और तुम्हारे पास रहनी चाहिए" तो बच्चों में स्वामित्व भाव आ जाता है। जीवन का आनन्द लेने के लिए बच्चों के साथ रहना, उन जैसा बनना और उनका आनन्द लेना बहुत अच्छा है। इससे हमारी अबोधिता का पोषण होता है। मैने देखा है कि सहजयोग में लोग अबोध बन जाते हैं। श्री गणेश जो कि आपके सिर के पिछले भाग में हैं और जो महा गणेश हैं उनका प्रभाव आँखों पर पड़ने लगता है। आँखो से कामुकता और लालच निकल जाते हैं क्योंकि आपका चित्त पवित्र हो जाता है। आपको न तो अपनी आँखे फोड़नी पड़ती है और न ही अपने हाथ काटने पड़ते हैं। आप वास्तव में पवित्र हो जाते हैं। श्री गणेश की तरह आपकी भी अबोध सन्तो की तरह सृष्टि की गई है। अपनी पवित्रता का सम्मान करने का प्रयत्न करें। यह आपको युवा और प्रफुल्लित बनाये रखेगी।

महाराष्ट्र में आठ स्वयंभु: गणेश हैं और मैने देखा है कि महाराष्ट्र के लोग अत्यन्त अबोध हैं' यह बहुत ही प्राचीन देश है और इस क्षेत्र के लाग श्री गणेश की पूजा करते हैं तथा निश्छल हो गए हैं। आजकल दस दिनों के लिए वे गणेश की स्थापना कर रहें है। मिट्टी से वे गणेश बनाते हैं तथा बाद में वे इसे समुद्र या नदी में प्रवाहित कर देते हैं। परन्तु यह कोका कोला सभ्यता अब भारत में भी आ गई है, इसके प्रभाव में लोग श्री गणेश के सम्मुख भद्दे-भद्दे गीत गाते हैं और मदिरा पान करते हैं। ये सब जनता के गणेश हैं। अत: अपने पिछले दो प्रवचनों में मैंने उन्हें ऐसा न करने की चेतावनी दी है और बताया है कि यदि श्री गणेश नाराज हो गए तो भूचाल आ जाएगें। परन्तु उन्हें विश्वास ही न होता था। तीसरे वर्ष गणेश को जल में प्रवाहित करके नशे में धुत रात के समय जब वे लोग नाच रहे थे तो अचानक भंयकर भूचाल आया और सहजयोगियों के अतिरिक्त सभी लोगों का दफन हो गया। वहां के सहजयोग केन्द्र को भूचाल ने छुआ तक नहीं। केन्द्र के चारों ओर बहुत बड़ी खाई बन गई। लोग बचाव के लिए केन्द्र की ओर दौड़े, पर खाई में गिर कर उनकी मृत्यु हो गई।

अबोधिता अत्यन्त शक्तिशाली है। कोई भी व्यक्ति यदि किसी का पावित्र्य भंग करने का प्रयत्न करे तो अंतत: श्री गणेश उसे कठोर दंड देते हैं। जो लोग हृदय से श्री गणेश की पूजा नहीं करते वे असंतुलन के शिकार हो सकते हैं। दायीं ओर जा कर उन्हें प्राय: शारीरिक रोग हो सकते हैं और यदि उनका झुकाव बायें को हो जाए तो वे मनोदैहिक रोगों के शिकार हो सकते हैं। ये रोग असाध्य हैं। हमारे देश में कुछ नीच किस्म के लोग हुए हैं जिन्होंने सिखाया कि यौन द्वारा कुण्डलिनी को जागृत किया जा सकता है। वे तान्त्रिक बन बैठे। इन तान्त्रिकों ने मन्दिरों में सभी प्रकार के कुकृत्य किये। इन्होंने श्री गणेश का कामुकता द्वारा अपमान किया। उन सबका अब नाश हो रहा है। अत: श्री गणेश द्वारा आशिर्वादित किसी अबोध व्यक्ति को चुनौती देने का कभी दुस्साहस नहीं करना चाहिए।

केवल आत्मसाक्षात्कार द्वारा ही आप अपने अन्दर श्री गणेश को जाग्रत कर सकते हैं।

परमात्मा आप को आशिर्वादित करें।

●●

होली तत्त्व

17-3-1995

आज होली है। आज की होली पहले से बहुत भिन्न है। होली का, तत्त्व जानना चाहिए। होली में अपने अंदर की गंदगी और दोष जलाकर हृदय शुद्ध करते ही जो प्रेम उमड़ आता है,उसके चैतन्य से सब तरफ चैतन्य के रंगों की बौछार होने से सब लोग मस्त हो जाते हैं। इसीलिए सर्वप्रथम होली में अपने अंदर की बाधाएँ जलानी चाहिएं।

सहजयोग में राजनीति नहीं होनी चाहिए। पूरे समाज के लोगों में राजनीति की जो जबरदस्त पकड़ है उसके कारण सहजयोगी भी इसकी लपेट में आ जाते है। एक व्यक्ति जो पूरी तरह सहजयोग न जनाता हो, दूसरों को अपने इस दोषी स्वभाव से कुछ कह देता है और फिर दूसरों में इसका असर आ जाता है और वो भी इसे किसी और तक पहुँचा देता है। जैसे कुछ हवा सी चलती है, फ्लू की तरह। यह एक बीमारी है। यह फैलती जाती है। पहले ज़माने में औरतें राजनीति करती थीं और आदमी लोग लड़ते थे, लेकिन अब उल्टा हो रहा है। कोई भी आदमी जो ऊँचा उठना चाहता है उसे ऐसी हरकतों में नहीं उलझना चाहिए।

यह एक बड़ा भारी प्रेम है। मैं देखती हूँ, मैं बोलती नहीं लेकिन सब जानती हूँ। सहजयोगियों में आपस में बैर नहीं होना चाहिए। यह मोह के कारण होता है। नारद मुनि की तरह सहजयोगी एक दूसरे को उलट पुलट चीजें बताकर आपसी बैर बढ़ाते जाते हैं। इस आपसी बैर के बढ़ने से प्यार का जाल टूट जाता है। हमें सहजयोग से प्यार होना चाहिए और मां से प्यार होना चाहिए। फिर भी यह चीज़ पहले से अभी कम है।

लेकिन अब लोग दूसरी तरफ जा रहे हैं। कोई कहते हैं हम दिल्ली के सहजयोगी हैं, कोई नौएडा के, फिर कोई और अपने को कहीं और का सहजयोगी कहता है। हम सब एक हैं। हम में, कोई दिल्ली का, बम्बई का, ऐसा फर्क नहीं होना चाहिए। हम सब एक हैं। हम सहजयोगी हैं। समुद्र की बात करो, बूंद की नहीं। कोई आपको कुछ बोल के परेशान करता है कोई बात नहीं, उन्हें कहने दीजिए। वह सब सामने आता है, धीरे धीरे।

हमारी शादी हुई थी तब हमारे यहाँ सौ से भी ज़्यादा आदमी थे। हमनें कभी किसी चीज़ की परवाह नहीं की। कोई कुछ कहे कोई बात नहीं। साधु संत जैसे रहें, सब की सेवा की। सब को खुश रखा। अब भी हमारे दोस्त हैं लेकिन हमारे पति के नहीं हैं। जब भी हम लखनऊ जाते हैं तो सब के सब सिर्फ हमें मिलने आते हैं। हमसे उन लोगों को बहुत लगाव है। हमारे पति को मिलने कोई भी नहीं आता, सब हमें मिलने आते हैं। निर्व्याज्य प्रेम होना चाहिए।

कोई कुछ कहे, बके, हमें उससे कोई मतलब नहीं। अगला जन्म तो हम सहजयोगियों को है नहीं, और अगर हो भी तो संत का जन्म रहेगा। इस जन्म का इसी जन्म में धोइये, स्वच्छ हो जाइए। अगले जन्म में धोने का अवसर नहीं मिलेगा। जो भी कुछ धोना है अभी धोना है, इसी जन्म में ताकि अगला जन्म हो भी तो वो दोषरहित हो। संत का जन्म रहेगा।

आक्रामकता हममें हैं आक्रामक स्वभाव है। दूसरा, लोगों में बाधा भी है। इन दोनों को हम निकाल सकते हैं। सहजयोग में हमारे पास इसके लिए उपाय हैं। यहाँ सब निकाल देना चाहिए। तीसरा, (हिपोक्रसी) पाखण्ड। अपने आप को बढ़ावा देकर लोगों के सामने पेश होना। अंदर है कुछ और, लोगों को बढ़ा चढ़ाकर बताना कुछ और। इससे हमें क्या फायदा? हम अपने अपको ध

ोखा दे रहें हैं। अंदर से काट रहे हैं। अंदर और बाहर एक चीज़ होनी चाहिए। बग़ैर इन दोषों को होली में जलाए कोई फायदा नहीं। फिर वह कृष्ण की होली नहीं रहेगी। बदला, दोष, बाधा सब होली में जलाइए। ग्रुपबाज़ी, राजनीति सब जला दीजिए। एक ग्रुप, एक जाति नहीं होना चाहिए। यह हमारे लिए ठीक नहीं है। एक ग्रुप बनाकर रहना ठीक नहीं। एक जाति के लोग अपना ग्रुप बना लेते हैं, यह ठीक नहीं है। अब हम सहजयोगी बन गए हैं। हम किसी ग्रुप या किसी जाति के नहीं रहे। अपने ही लोगों को महत्त्व देना बेकार बात है। अपने ही जाति के लोगों को, अपने ही इलाके के लोगों को आगे करना ठीक नहीं। जो अगुआ हैं उन्हें इस तरफ ध्यान देना चाहिए, इस ओर दृष्टि करनी चाहिए। उन्हें देखकर बाक़ी लोग भी वैसा ही बर्ताव करते हैं। यह सब होली में जलाएँ।

इसके लिए एक मंत्र है; बहुत बडा मंत्र –"सबको माफ़ करो"। इसके बग़ैर उन्नति नहीं। हमें मां से मतलब है, सहजयोग से मतलब है। कोई अगर कुछ ग़लत कहे तो उसे सुबुद्धि से जानो, उनको बकवास करने दो। हमारा ख्याल इस तरफ होना चाहिए की इस ग़लत बात को सुनकर हमारे अंदर कोई ग़लत बात तो नहीं जा रही है?

हम बुद्ध को जानते हैं और सबको मानते हैं, यह छोड़ दो। वैमनस्य से कोई लाभ नहीं। अपने अंदर के षटरिपुओं को जलाओ। हमें व्यक्तिगत तौर पर उन्नति हासिल करनी चाहिए। व्यक्तिगत तौर पर। इसी से सम्पूर्ण समष्टी में बदलाव आएगा। एक सेब यदि ख़राब हो तो पचास सेबों को ख़राब कर देता है। लेकिन सहजयोग में एक व्यक्ति, बाकियों को ठीक करता है-पचासों को। ख़राब स्वभाव का औरों पर असर पड़ता है। परिवार में भी यह चीज़ हम देखते हैं। यदि परिवार में एक व्यक्ति भी ख़राब स्वभाव का हो तो सब पर असर आता है। लेकिन सहजयोग में ऐसा नहीं है। एक भी अच्छा सहजयोगी हो तो वह सबको ठीक करता है। यदि कोई ग़लत व्यक्ति हो तो वह अपने आप निकल जाएगा। हमें उसमें अपना चित्त डालने की ज़रुरत नहीं। वह चीज़ आप मुझ पर छोड़ दीजिए।

होली में जलाने के लिए सब लोग अपने अपने घर की लकड़ी देते हैं ताकि उस लकड़ी के जलने से उनका घर बाधारहित हो जाए। सहजयोग में यह लकड़ी हमारा शरीर है। अपने शरीर की लकड़ी जलाकर स्वयं को सोना बनाओ। अपनी क्षमा की शक्ति को बढ़ाओ। राइट साईड (आक्रामक स्वभाव) को कम करें। "हम्" और "क्षम्" आज्ञा के दो मंत्र हैं। जो भूत बाधाओं से पीड़ित हैं वह बाधा निकालने के लिए औरों का सहारा लेते हैं। इससे कोई फायदा नहीं। इसे हम खुद निकालें। हमें अब औरों की सहायता की जरुरत नहीं। यह कहना चाहिए कि मैं सहजयोगी हूँ या मैं सहजयोगिनी हूँ, बाधा दूर हो जाएगी। दूसरों को मत ढूँढो। बाधित लोगों को मत ढूँढो। इससे बाधा बढ़ जाती है। वह शारीरिक हो या मानसिक हो उनका एक ग्रुप बन जाता है।

एक और बात मैंने देखी है कि लोग मुझपर अपना अधिकार जताते हैं। चर्चा, विवाद शुरु कर देते हैं। मैं देखती हूँ, तुरंत स्वाधिष्ठान पूरी तरह जकड़ जाता है। और वाद-विवाद का कोई अंत ही नज़र नहीं आता। तीन-तीन बजे तक बैठे रहते हैं। अरे भाई, हमनें आपको समझाया आप बाधा ग्रसित हो, आपका घर शमशान के पास है उसे छोड़ दो। किराये का घर है उसे छोड़ने में क्या हर्ज़ है? लेकिन नहीं। उस तरफ उनका ध्यान नहीं, और अधिकार जताते जा रहे हैं। हमने देखा है बाधा वाले सबसे आगे रहते हैं। बाधा चिपकती है।

प्रोटोकॉल (नियम-आचरण) होना चाहिए। मां के प्रति श्रद्धा होनी चाहिए। सहजयोग में नितांत श्रद्धा होनी चाहिए। श्रद्धा के बिना चर्चा करने से दाहिनी विशुद्धि तुरन्त पकड़ी जाती है। प्रोटोकॉल का ख्याल करना चाहिए। जब भी ग़लत बात होती है तो प्रोटोकॉल की तरफ ध्यान देना चाहिए। सबसे ज्यादा श्रीकृष्ण ने राक्षसों को मारा। श्री राम ने राक्षसों को मारा। लेकिन लोग मुझे कहते है, मां जैसा अवतरण आज तक नहीं हुआ है। आपका कार्य महान है। आप में लोगों के अंदर स्थित राक्षसी प्रवृतियों को नष्ट करने की शक्ति है।

प्रतीकात्मकता से होली जलाओ। स्वच्छ हो जाओ। मुक्ति में जो आनंद आ रहा है इसमें नाचो गाओ और सबको आनंदित करो। सहजयोग की होली कृष्ण की होली है। आजकल तो लोग होली में भंग पीते हैं, श्रीकृष्ण क्या भंग पीते थे? भंग तो सिर्फ शिव शंकर पीते हैं। **जिनको भी सहजयोग में रहना है उन्हें व्यभिचार त्यागना होगा।** यही होली का महत्त्व है।

खाने-पीने को हम बहुत महत्त्व देते हैं। किसी को चाट कहाँ अच्छी मिलती है, मिठाई यहाँ अच्छी मिलती है, यहाँ ये, सारा चित्त इन्हीं चीज़ों में लगा रहता है। अस्वाद होना चाहिए। ये या वो। कहते हैं -श्री कृष्ण को लड्डू ज़्यादा पसंद हैं और देवी को पूरणपोली। अब आप लोग भी मेरे लिए कुछ कुछ बनाकर लाते हो लेकिन मुझे इन सब चीज़ों से कोई मतलब नहीं। अस्वाद होना चाहिए। अस्वाद में उतरना चाहिए। अब आप लोग इतने प्यार से मेरे लिए चीज़ें बनाकर लाते हो इसीलिए मैं वो खा लेती हूँ। वो बात अलग है। हाँ दूसरों को बनवाकर खिलाओ। ज़्यादातर उत्तरी भारत में लोगों का खाने में ध्यान ज़्यादा है, फिर महाराष्ट्र में भी है और दक्षिण भारत में भी है। वैसे सभी जगह है। हमें लोग पूछते हैं, आपको क्या पसंद है? हमें तो याद भी नहीं आता कि हमें क्या अच्छा लगता है।

ईसा मसीह ने कहा था- "Hate sin and love the sinner". (बुराई से घृणा और बुरे से प्यार करो) गुण देखिए, अवगुण देखिए। सहजयोग प्यार से ही बढ़नेवाला है। आप अपने प्यार को बढ़ाइए। इस मामले में विदेशी हिन्दुस्तानियों से कहीं अच्छे हैं। वो कभी आपस में झगड़ते नहीं। जो उन्हें मिले उसी में खुश रहते हैं। लेकिन हम हिन्दुस्तानियों का ऐसा नहीं है। यहाँ पर तो चार लोग एक बाथरूम इस्तेमाल करते हैं लेकिन जब गणपति पुले जाते हैं तब Attached Bath. (संलग्न गुसलखाना) चाहिए। विदेशियों का ऐसा नहीं है। वो लोग अपने देश में खुद की मोटर रखते हैं, हवाई जहाज़ से सफर करते हैं। हमारे जैसा खाना वे लोग खाते नहीं। उनका खाना अलग होता है। लेकिन जब वो यहाँ आते है हमारा खाना तक वो बड़े प्यार से खाते हैं और इतना ही नहीं उसकी प्रशंसा भी करते हैं। वैसे वो लोग तो हमें भगवान ही समझते हैं क्योंकि वे जानते हैं की शरीर का आराम, आराम नहीं है, ध्यान आत्मा की तरफ रहना चाहिए। उन लोगों की आपसे से बहुत अपेक्षाएँ हैं। हमें उन अपेक्षाओं की तरफ ध्यान देना चाहिए।

और भी कई चीज़े हैं जैसे कोई भी काम बग़ैर पूछे करने लगते हैं। मुझे पूछे बग़ैर काफी चीज़े की जाती हैं। इससे अंत में नुक्सान हो जाता है। पूछना चाहिए। इसी में सबकी भलाई है। ऐसा क्यों होता है, इसकी तरफ ध्यान देना चाहिए। असल में होली का तत्त्व यही है कि अपने आपको अंदर से साफ करना चाहिए।

येशु बहुत पहले कश्मीर आए थे तब उनकी मुलाक़ात हमारे पूर्वज राजा शालीवाहन से हुई थी। तब उनको पूछने पर येशु क्रिस्त ने बताया "मुझे ईसा मसीह कहते हैं और जिस देश से मैं आया हूँ वहाँ के लोगों को म्लेच्छ कहते हैं (जो मल की इच्छा रखते हैं) इसीलिए मैं आपके देश में आया हूँ। तब राजा शालीवाहन ने उनसे कहा कि वे अपने ही देश में वापस जाकर उन लोगों से कहें की वे "निर्मलम् तत्वम" अपनाए।

सहजयोग का जो काम है यदि मेरे अकेले से हो सकता तो आप लोगों की जरुरत ही नहीं रहती। लेकिन यह कार्य आपके माध्यम से होना हैं। आप सब लोग सहजयोग के माध्यम हैं। आप सब जितने स्वच्छ रहेंगे उतना आप सहजयोग के लिए उपयुक्त साबित होंगे। यह आपकी गहराई पर निर्भर करता है। और गहराई आएगी कैसे? गहराई श्रद्धा से प्राप्त होगी। समर्पण से। अगर हमें मोती हासिल करना है तो समुद्र की गहराई में उतरना होगा। इसीलिए गहराई में उतरना चाहिए। अब देखिए जो विदेशी यहाँ आ रहे थे उन्हें आधे पैसे में टिकट प्राप्त हुआ और उन्होंने श्रद्धा से बैंकाक जाने की इच्छा करते ही उन्हें उसी टिकट पर बैंकाक जाने की स्वीकृति मिली। गहराई में उतरने से सब चीज़ अनायास प्राप्त हो जाती है। इसीलिए गहराई में उतरना चाहिए उसके बिना कोई फायदा नहीं।

●●

नव रात्रि पूजा

परम पूज्य माता जी श्री निर्मला देवी का प्रवचन(सारांश)

कबैला-9-10-1994

कुण्डलिनी ने आपको आत्म साक्षात्कार प्रदान किया है। नि:सन्देह कुण्डलिनी आदि शक्ति का प्रतिबिम्ब है और जगदम्बा भी आदिशक्ति का ही अंश हैं। दो हृदयों (बायां, दायां) के मध्य के महत्त्वपूर्ण बिन्दु पर उनका स्थान है।

इस चक्र में ये सारी शक्तियाँ रखी गई हैं। अत: कल्पना कीजिए इनमें से कितनी शक्तियाँ अन्दर होनी चाहिएं। आप के शरीर के आस पास मौजूद सभी गणों में मध्य हृदय के माध्यम से उसकी सारी शक्तियों की अभिव्यक्ति होती है। यही गण आपको सुरक्षा, निद्रा, ऊर्जा एवं आशीर्वाद प्रदान करते हैं। सभी निरन्तर कार्यरत रहते है। माँ जगदम्बा के प्रति ये अत्यन्त समर्पित हैं तथा सदा उनके सम्पर्क में हैं। वे ब्रह्माण्ड की माँ है; आप कल्पना कर सकते हैं कि पूरे ब्रह्माण्ड की देख-भाल करने में उन्हें कितना व्यस्त रहना होता होगा। यह केन्द्र यदि दुर्बल हो गया है तो गण भी दुर्बल हो जाते हैं और इस दुर्बलता के कारण वे अपनी शक्तियों का उपयोग नहीं कर पाते। माँ का चक्र होने के कारण यह केन्द्र अति सूक्ष्म है। माँ के प्रेम को समझ पाना असम्भव है। लड़कियाँ विवाह के पश्चात जब माँ बन जाती हैं तो उन्हें समझ आता है कि उनके पालन पोषण के लिए उनकी माताओं को कितना कष्ट उठाना पड़ा होगा? इसी प्रकार सहजयोगी जब गणों सम अच्छे सहजयोगी बन जाते हैं तब वे समझ पाते हैं कि उनकी नकारात्मकता से लड़ने के लिए गणों को कितना धैर्य, प्रेम तथा विवेक अपनाना पड़ा होगा! अत: जगदम्बा की सभी शक्तियाँ सभी प्रकार की नकारात्मकता को नष्ट करने के लिए कार्य करती हैं। अत: विश्व की, आपकी तथा सहज विरोधी सारी नकारात्मकता को नष्ट करना जगदम्बा का सर्वोपरि स्वभाव है।

उनकी विध्वंस शक्ति बहुत प्रकार से कार्य करती है। सर्वप्रथम हमें समझना आवश्यक है कि यदि हम देवी के प्रति अपराध करते हैं तो हममें कैंसर, एडस आदि मनोदैहिक, शारीरिक रोग होने लगते हैं। परन्तु कुछ रोगो का सम्बन्ध गणपति से भी है। गणपति सभी गणों के स्वामी हैं और अपने बेटे गणपति के माध्यम से माँ सारे गणों का संचालन करती हैं। ये सब इतना सम्बद्ध है। जब हम माँ के विरुद्ध अपराध करते हैं अर्थात चरित्रहीन हो जाते हैं और धर्महीन कार्य करने लगते हैं, तो क्योंकि वो माँ हैं, आपको दण्डित करने में वे समय लगाती हैं। आप सहज धर्म को हृदय से समझते हैं, अन्दर से, यह सब मुझे आपको बताना नहीं पड़ता। आप जानते हैं कि ठीक क्या है और गलत क्या है। यदि आप अपने पिता विरोधी अपराध, जैसे डींग मारना, अत्याचार करना, कटु शब्द बोलना आदि, करते हैं तो आपको तुरन्त दण्ड मिल जाता है। परन्तु वे क्योंकि माँ है और करुणा की सागर हैं अत: दण्ड देने में वे देर लगाती हैं और व्यक्ति को सुधारने के लिए तथा अपना मार्ग दर्शन करने के लिए समय देती हैं। परन्तु दण्ड जब शुरू होता है तो आपको बहुत ही भयंकर किस्म की बीमारियां होने लगती है। यह सब भय के कारण होता है, जब कोई व्यक्ति आपको डराता है या आपके प्रति आक्रामक होता है। सताये हुए, त्रस्त एवंम भयभीत व्यक्ति का विश्वास माँ से उठना शुरू हो जाता है। ऐसे में मध्य हृदय चक्र की देखभाल होनी चाहिए। भयभीत व्यक्ति माँ से दूर बायीं ओर को जा सकता है क्योंकि वे ही आत्म-विश्वास, साहस एवम् बहादुरी प्रदान करने वाली हैं। परन्तु आप भयभीत हैं या डर के साये में हैं तो आपको बायीं ओर फेंका जा सकता है और आप भयंकर तथा असाध्य रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं।

धर्मविहीन, यदि आप वासनाओं में फंस जाते हैं, तो भी यह मध्य मार्ग आपको बायीं ओर को फेंक देता है क्योंकि आप श्री माता जी के चरण कमलों में होने के योग्य नहीं होते। जब हम भयभीत होते हैं तो हृदय चक्र में हृदय-अस्थि दूरस्थ नियन्त्रण (Remote Control) की तरह सभी गणों को सूचना दे देती है कि आक्रमण होने वाला है। परन्तु यदि स्वेच्छा से वासनाओं में फंस कर आप बायीं ओर को जाना चाहेंगे तो ये केन्द्र चिन्ता नहीं करता। तब

गण कहते हैं कि जो चाहे करो और जैसे चाहे आचरण करो। भिन्न प्रकार की बायीं ओर को जाने वाली ये गतिविधियाँ आपको माँ से दूर ले जाती हैं।

अमेरिका में एक बहुत पुराने सहजयोगी अपनी दुकान से बाहर आये। अपनी कार से ज्योंही वे बाहर निकले वहां एक आदमी कटार लिए हुए बैठा था। उसने उसके मध्य हृदय में कटार घोंप दी। इस व्यक्ति का खून बहने लगा। उसने बताया, "श्री माता जी मैं नहीं जानता कि मुझे क्या हुआ, मेरे अन्दर ऐसी शक्ति आ गई कि मैंने उस व्यक्ति को पकड़ा और उससे लड़ने लगा तथा उससे कटार छीन ली। कटार का मुट्ठा उसके हाथ में था और कटार मेरे हाथ में आ गई और वह व्यक्ति भाग खड़ा हुआ। परन्तु मुझे रक्त बहने की कोई चिन्ता न थी। मैंने अपने साथी को बुलाया और हम आधा घंटा तक उस व्यक्ति की तलाश करते रहे।" वे पुलिस में नहीं गए। जब वे थाने गए तो पुलिस वाले हैरान थे क्योंकि उसकी पूरी कमीज़ रक्त में डूबी हुई थी। पुलिस को ध क्का लगा कि आधा घंटा तक वे उस व्यक्ति की तलाश करते रहे। साहस देखिए। तब उन्हें हस्पताल ले जाया गया जहां उन्हें टाँके लगाये गए और वे ठीक हो गए। यह उस व्यक्ति के चिन्ह हैं जिसे इस प्रकार की कोई भयंकर बीमारी नहीं हो सकती क्योंकि उसके मस्तिष्क में किसी भी प्रकार का कोई भय नहीं होता। वह कहने लगा कि मैं कभी किसी से नहीं लड़ा और न ही कभी अपने बच्चे को चांटा मारा, मैं पहलवान नहीं हूँ फिर भी मेरी समझ में नहीं आया कि कहां से ये शक्ति मुझ में आ गई और मैं यह सब कर सका।

इस प्रकार की बहुत सी कहानियाँ सहजयोगियों तथा सन्तों के विषय में हैं। उन पर जब किसी ने आक्रमण किया तो इस प्रकार की भयानक व्याधियों से साहसपूर्वक अपनी रक्षा करने के लिए उन्होंने आक्रमणकारी पर निडरतापूर्वक आक्रमण कर दिया। इस बात पर विश्वास नहीं होता परन्तु प्रति दिन ऐसी घटनाएं होती रहती हैं। मुझे लोगों के पत्र आते रहते हैं कि उन्होंने किस प्रकार से साहसिक कार्य किये। यदि आपको देवी में विश्वास है तो आप जान लें कि वे बहुत शक्तिशाली हैं। वे अत्यन्त विवेकशील हैं, यदि उन्होंने आपकी रक्षा करनी है तो वे इस प्रकार से आपकी रक्षा करेंगी कि आप समझ भी न पायेंगे। अनुभव से यह विश्वास विकसित किया जाना चाहिए कि किस प्रकार सदा आपकी रक्षा की गई, सहायता की गई और किस प्रकार आप कठिनाइयों से बच पाये। परन्तु यदि जीवन के आकाश में बादल छाये देखकर चिन्तित या परेशान हो जाएं तो इसका अर्थ है कि आप अभी तक दुर्बल हैं।

यदि वास्तव में देवी की पूजा करते हैं तो आपको किसी भी प्रकार की चिन्ता या भय नहीं होना चाहिए। जो भी आप कर रहे हैं उसे निडरतापूर्वक करें। साथ ही मुझे आपको यह भी बताना है कि व्यक्ति को व्यर्थ की बातें करते हुए जिन्दा लाश की तरह से नहीं घूमते रहना चाहिए। परन्तु यदि आपको कोई कार्य करना है तो स्पष्ट विचारों और बिना किसी भय के इसे करें। देवी की सभी शक्तियां आप में अभिव्यक्त होने लगेंगी। निडर व्यक्ति को अपनी नींद या सुख-सुविधा की कोई चिन्ता नहीं होती। निडर से यह अभिप्राय नहीं कि आप सभी को आघात पहुचाएं या उल्टी सीधी बातें करते फिरें। इसका अर्थ यह है कि आप निडर हैं और यदि कोई आप पर आक्रमण करता है तो आप अपनी रक्षा कर सकते हैं। मैंने यह कहानी आपको इसलिए सुनाई क्योंकि यह सुरक्षा आन्तरिक नहीं थी जैसे कि देवी रक्षा करती है परन्तु वास्तव में उसने अपनी रक्षा स्वयं की। अत: शक्ति उसके माध्यम से कार्य करने लगी। आपको अपने मस्तिष्क और शरीर को इन शक्तियों का प्रक्षेपण करने देना चाहिए, वैसे हम यहां पूजा आदि सभी कुछ करने के लिए हैं। शक्ति के होते हुए भी आपका मस्तिष्क कहता है कि यह ठीक नहीं है। इसके विषय में लोगों ने बहुत सी कहानियों और चमत्कारों का वर्णन किया है। आपको किसी चीज़ से नहीं डरना चाहिए। यदि आपने कोई गलती नहीं की है, यदि आप ठीक मार्ग पर हैं तो सदा आपकी रक्षा की जाएगी। अब यह बात याद रखें कि, "आपकी सदा रक्षा की जाएगी।" इस बात को याद रखें और इसमें विश्वास करें कि, "मैं सदा सुरक्षित हूँ।" यह कार्य अत्यन्त कठिन है क्योंकि हमारा मस्तिष्क हमें कहता है, "हे परमात्मा, क्या होगा!" निडर होना प्रथम तथा सर्वोपरि है ताकि देवी स्वयं की अभिव्यक्ति कर सकें। इसे इस प्रकार समझें। अब गण आपका पीछा कर रहे हैं, यदि किसी सेना का अगुआ ही डरपोक व्यक्ति हो तो अन्य लोग क्या करेंगे। इस प्रकार आप आत्म-निर्भर हो जाते हैं। इस विश्वास का विकसित होना भी आवश्यक है।

मैंने देखा है कि कुछ बीमार व्यक्ति हर हाल में मुझे मिलना चाहते हैं क्योंकि वे स्वयं पर निर्भर नहीं होते। वे अपना इलाज कर सकते हैं। मेरे पास आने की उन्हें कोई आवश्यकता नहीं होती। ऐसे बहुत से उदाहरण हैं, जहां लोगों ने प्रार्थना मात्र से स्वयं को रोग मुक्त किया तथा दूसरों का भी इलाज किया। परन्तु विश्वास जब परिपक्व नहीं होता तब वे सोचते हैं कि मैं उनका इलाज करूं, उन्हें छुऊं आदि-आदि। अब आप आत्म-निर्भर हो जाएं, आप न केवल अपनी सहायता कर सकते हैं, परन्तु अन्य लोगों की भी सहायता कर सकते हैं। परन्तु यदि आपको स्वयं में विश्वास नहीं है कि आप अपनी रक्षा कर सकते हैं, अपना ईलाज कर सकते हैं तब हर समय माँ को यह कार्य करने पड़ते हैं।

बच्चा जब छोटा होता है तो आप उसका पोषण करते हैं, देखभाल तथा सभी कार्य उसके लिए करते हैं परन्तु जब वह बड़ा हो जाता है तो वो यह नहीं चाहता कि उसकी माँ उसे दूध पिलाए। इसी प्रकार सहजयोगियों को देखना चाहिए कि मैं कितने सालों से कार्य कर रही हूं। आपको गरिमापूर्वक उन्नत होना है और परिपक्व होना है ताकि आप स्वयं कार्यों को ठीक प्रकार से कर सकें। माँ ने आपको आशीर्वादित किया है। उन्होंने सारी शक्तियां आपको दे दी है। परन्तु धैर्य रूपी शक्ति प्राप्त करना अत्यन्त कठिन है, आपको अपनी माँ की तरह से धैर्यवान होना होगा। आप इसे कठिन समझते रहें परन्तु इसके लिए प्रयत्न करते रहें। मैं बहुत से ऐसे लोगों को जानती हूं जो सोचते हैं कि वे आध्यात्मिक रूप से कुछ भी नहीं तथा उन्हें कोई भी उपलब्धि नहीं हुई। यह पूर्णतया पलायन है। आप अपने व्यक्तित्व से ही पलायन करना चाहते हैं। केवल देखें, यदि आप अर्न्तदर्शन करते हैं तो आप समझ जाएंगे कि आप एक वास्तविक शक्तिशाली आध्यात्मिक व्यक्ति के रूप में विकसित हो चुके हैं। आपको कोई छू नहीं सकता। आप सभी कुछ कर सकते हैं। आप अपनी देखभाल कर सकते हैं और अन्य लोगों को भी आश्रय दे सकते हैं। इन सारी शक्तियों का प्रकटीकरण आप में हुआ है। परन्तु अभी तक आप इसे समय और अन्य लोगें पर छोड़ देते हैं, स्वयं पर नहीं। आज तक किसी ने भी अपने सभी शिष्यों का योग दिव्य शक्ति से नहीं कराया, क्योंकि यह दिव्य शक्ति से नहीं कराया, क्योंकि यह दिव्य शक्ति यह है कि किस प्रकार अन्य लोगों से प्रेम करें। यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है। कुछ लोग अपने बच्चे से बहुत लिप्त हैं। सहज में आने से पूर्व ये व्यक्ति अपनी स्वार्थपरता ओर बच्चों और अपनी पत्नी के प्रति निर्लिप्सा के लिए प्रसिद्ध थे परन्तु अब वो अपनी पत्नी और बच्चों से गोंद की तरह चिपक गए हैं। मैं यह नहीं कह रही कि आप अपने परिवार या बच्चों का त्याग करें परन्तु मैं फिर कहती हूं कि निर्लिप्सा आपकी शक्ति है, साक्षी भाव से हर चीज़ को देखें।

अब ये मत सोचें, "मुझे सहजयोग में आये अभी थोड़े ही दिन हुए हैं।" ये भी न सोचें कि फलां व्यक्ति मुझसे बहुत ऊँचा है और मैं बेकार हूं। स्वयं आत्मदर्शन करें और देखें कि आपको कितनी शक्तियां प्राप्त हो गई हैं। जितना अधिक ज्ञान आपको प्राप्त होगा उतना ही अधिक आप नम्र हो जाएंगे। किसी भी तरह का कोई भय नहीं होना चाहिए, आपके पास यदि बहुत सा धन हो तो आपको डर हो सकता है। यदि आप बहुत अच्छे पढ़े-लिखे हैं तो भी आपको ईर्ष्या का डर हो सकता है, गहने इत्यादि आपके पास हों तो चोरों के आने का डर हो सकता है। आप यदि राजनैतिज्ञ हों तो आपको डर हो सकता है कि आपकी अनुपस्थिति में कोई आपका स्थान न ले ले, परन्तु सहजयोग में आने के बाद बात बिल्कुल भिन्न हो जाती है।

आपके आत्म-साक्षात्कार को कौन चुरा सकता है? आपकी शक्तियों को कौन चुरा सकता है? आपकी चैतन्य लहरियों को कौन चुरा सकता है? यह बात सोचिये, और आपके प्रेम को कौन चुरा सकता है? क्योंकि प्रेम तो आत्मा से आ रहा है। यह शाश्वत् है और इसका बहाव निरन्तर है। आत्मा से जब आप दूर चले जाते है तब आपको वे सब बातें महसूस होती हैं जो अन्धकार में महसूस होती हैं जो अन्धकार में महसूस होनी चाहिए।

माँ की एक अन्य शक्ति यह है कि वे आपको साक्षी स्थिति प्रदान कर देती है। आप सभी कुछ साक्षी भाव से देखते हैं, आप में अथाह धैर्य आ जाता है, जो भी होता रहे, ठीक है, क्रोध नामक एक भयानक अवगुण से आपको छुटकारा प्राप्त हो जाता है और इससे आपको अत्यन्त शान्तिमय साक्षी अवस्था प्राप्त हो जाती है कि आप दिनों-दिन युवा होने लगते हैं। कुछ सहजयोगियों को मैंने आत्म-साक्षात्कार दिया था। इस वर्ष जब मैं उनसे

मिली तो उन्हें पहचान नहीं पाई। अचानक उनकी आयु दस वर्ष कम लगने लगी। आपका व्यक्तित्व अत्यन्त शान्तिमय हो जाता है क्योंकि आपकी माँ आपके साथ होती है, दृढ़ विश्वास कि वे सदा हमारे साथ है, हमारी रक्षा करता है। परन्तु अब क्योंकि हम बड़े हो गए हैं, इसलिए उन्होंने हमें सारी शक्तियां दे दी हैं। तो डरने की क्या बात है? पर ये विश्वास अन्धविश्वास नहीं होना चाहिए, ज्योतिर्मय विश्वास होना चाहिए, अन्धविश्वास में आपका विश्वास तो होता है परन्तु शक्तियां नहीं होतीं। ज्योतित प्रकाश में आप में विश्वास भी होता है और शक्तियां भी। ऐसा होने पर आप अपने धर्म में तेजी से बढ़ने लगते हैं और अपने गुणों से आप भयभीत नहीं होते। सभी जगह, सभी लोगों से आप सहजयोग की बात करते हैं और यह कार्य होता है।

एक बार जब आप में भय समाप्त हो जाएगा तो पूरी तस्वीर आपको स्पष्ट दिखाई देने लगेगी क्योंकि आप दृष्टा बन जाएंगे। किस प्रकार सी॰एस॰ लुइस अपने मानसपटल पर हमारा जलूस देख सके। किस प्रकार विलियम ब्लेक हमारे विषय में भविष्यवाणी कर पाये। किस प्रकार सन्त ज्ञानेश्वर 'पस्यादान' के विषय में लिख पाये जो कि सहजयोगियों का वर्णन है। हर समय वे लोगों को विश्वस्त करने का प्रयत्न करते रहे। किस प्रकार रविन्द्र नाथ टैगौर गणपतिपुले जाना देख सके। जब लोगों का विश्वास ज्योतिर्मय हो जाता है तब इस प्रकार की घटनाएं घट सकती है।।

ज्ञानमय विश्वास में आपकी माँ आपको एक अन्य महान शक्ति प्रदान करती है, यह है विवेक बुद्धि। कोई मेरे पास आया और कहने लगा "यह व्यक्ति बहुत अच्छा है परन्तु किसी ने भी इसकी देखभाल नहीं की। ये बहुत विद्वान और महान व्यक्ति है।" मैने कहा ये फोटो मुझे दिखाइए। फोटो देख कर मैने कहा नहीं, इसे सहजयोग से पूरी तरह दूर रखिए।" उसके फोटो ग्राफ से मैं चैतन्य लहरियों को अनुभव कर सकी। एक अन्य व्यक्ति ने आ कर मुझे बताया कि कुछ नाइजिरियन लोगों ने उसे पत्र लिखा है कि वह 35 हजार डालर बैंक में जमा करें और हम भी लाखों डालर बैंक में जमा करेंगें। तब वह इसका एक तिहाई हिस्सा ले सकता है। "मैंने उसे बताया कि इससे परे रहे। यह सब घोटाला है।" जब वह अमेरिका वापस गया तो उसने पाया कि यह वास्तव में घोटाला था। मैने उसे बताया था कि चैतन्य लहरियाँ बहुत गर्म है। आप में चैतन्य लहरियाँ है, आप इन्हें महसूस कर सकते हैं। परन्तु इस नई चेतना का उपयोग यदि आप नहीं करते तो सहजयोग में आने का क्या लाभ है? वह सब छोड़ने के लिए जब मैने उससे कहा तो वह बहुत परेशान हुआ था। मैने पूछा कि तुम्हें धन कि क्यों आवश्यकता है। इस प्रकार शनैः शनैः आप अनुभव कर सकते हैं, उस अनुभव को हृदय में बिठा सकते हैं। और उस पर विश्वास कर सकते हैं। आप क्या थे? अब आप क्या बन गए हैं? श्री माता जी का चित्त आप पर है इसके कितने अनुभव आप कर चुके हैं।

यदि आपमें ज्योर्तिमय विश्वास है तो आप शक्तिशाली बन जाते हैं। अन्ध विश्वास के कारण आप शक्तिविहीन है। यदि आप विकसित, परिपक्व, आत्मसाक्षात्कारी बन जायें तो ये सारी शक्तियां कार्य करेंगीं। भारत में एक मछुआरा है जो कि स्नातब्य है। एक दिन नाव पर बैठ कर सहजयोग के कार्य के लिए वह दूसरे टापू पर जा रहा था। अपनी झोंपड़ी से जब वह बाहर आया तो उसने देखा कि काले बादल छाये हुए है और विष्णुमाया क्रीड़ा कर रही हैं। तट पर खड़े हो कर उसने विष्णुमाया से कहा "कृपा करके इन बादलों से कह दो कि सीमा में रहें। मैं माँ के कार्य के लिए जा रहा हूँ और वे रास्ते पर मुझे कष्ट देने की हिम्मत न करें। कल्पना करें, वे नाव में बैठे जा कर सहज का कार्यक्रम किया और वापिस घर आ गए। जब उसने अपनी झोपड़ी में प्रवेश किया तब वर्षा आरम्भ हुई। अपने ज्योर्तिमय विश्वास द्वारा पाँचों तत्व आपके वश में हो जाते हैं, इसके लिए आपको कुछ कहना नहीं पड़ता। शक्तियां इतनी महान हैं कि वे स्वतः ही कार्य करती हैं। आज जब पूजा होनी थी तो अचानक मौसम सुहावना हो गया। मैने नहीं कहा और भयंकर ठंड भी हो सकती थी। यह वास्तविकता विश्वास बन जानी चाहिए। पिछली बार यहां भयंकर बारिश हुई थी और लोगों को यह खंभे नीचे की ओर खींचने पड़े थे। ज्यों ही लोगों ने मेरी जय-जयकार करनी शुरु की बारिश रुक गई। यह अनुभव आपको परिपक्व करेगा। यह कष्ट भी परिपक्व बनने के लिए आते हैं। यह कष्ट यदि न आएँ और आप इन्हें वश में न करें तो आप समझ ही न सकेगें

कि विश्वास क्या चीज़ है। तट पर खड़ा हुआ व्यक्ति कहता है कि मुझे तैरना नहीं आता। परन्तु यदि आप उसे पानी में डाल दें तो वह तैरने लगता है और जान जाता है कि उसे तैरना आता है। इसी तरह से आप भी नहीं जानते कि आप क्या बन गए हैं? आप नहीं जानते कि आप तैराक बन गए हैं। आप यह भी नहीं जानते कि आप अन्य लोगों की रक्षा कर सकते हैं।

अभी तक आप यहां-वहां की छोटी-छोटी चीज़ों में व्यस्त हैं। जब आप यह जान जाएंगे कि आप क्या बने हैं तो आप अत्यन्त तुच्छ नज़र आने वाली अपनी तुच्छता को पूर्णतया परिवर्तित कर देंगे और पूरे आकाश पर छा जाएगें। यह शक्ति जो आपमें है, आपके अहम् को बढ़ावा नहीं देगी। यह आपको विनम्र, अत्यन्त प्रेममय और करुणामय बनाएगी। आप अपनी शक्तियों से अन्य लोगों को चोट नहीं पहुँचाएगें। यह पहचान है। यह माँ का प्रेम है और माँ के प्रेम की शक्ति है। जिस व्यक्ति की माँ अत्यन्त स्नेहमय और भली हो वह अत्यन्त अच्छा बन जाता है। यह मनोवैज्ञानिक सत्य है। नवरात्रि पूजा अत्यन्त शक्तिशाली पूजा है, क्योंकि यह आपकी शक्ति के स्रोतो को खोलती है और उनका प्रकटीकरण करती है। यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है और आज प्रात: काल से ही मैं चैतन्य लहरियों के साथ बह रही हूँ। यह चैतन्य लहरियों के झरनेसम था। पूरा समय मैं प्रकाश देख रही थी। इसी कारण मैने अपनी आँखे बन्द कर लीं। अन्यथा मै आप लोगों को न देखकर कुछ और देखती रहती।

परन्तु अब आप स्वयं प्रकाश हैं, प्रकाश अन्धकार से डरता नहीं। यह अन्धकार को दूर कर सकता है। आप यह प्रकाश हैं। पर आप अपने विषय में अति तुच्छ विचार लिए हुए हैं। मैं नहीं कहती कि आप गुरुओं जैसे बन जाएं और दो सींग लगा कर बड़ी-बड़ी बातें करते घूमे। आपकी नम्रता, करुणा, मधुरता तथा सदव्यवहार ही आपका श्रृगांर है। गलती करते हुए जहाँ भी मैं लोगों को देखती हूँ उन्हें समझाती हूँ, परन्तु मैं उन्हें इतनी अच्छी तरह से बताती हूँ कि वे जान जाते हैं कि वह उनके हित के लिए हैं। पूरा व्यक्तित्व और स्वभाव परिवर्तित हो जाता है पूरी मुखाकृति एवं गतिविधि परिवर्तित हो जाती है। बातचीत करने की शैली स्वत: ही ऐसे परिवर्तित हो जाती है जैसे अन्दर की पूरी मशीनरी परिवर्तित हो गई हो। आपमें एक वास्तविक महायोगी के गुण विकसित हो जाते हैं। महायोगी की यह अवस्था पहले भी कई लोगों ने प्राप्त की। परन्तु इसके लिए उन्हें बहुत चक्करदार रास्तों से गुजरना पड़ा। हृदय से उन्हें सब कुछ त्यागना पड़ा। पूर्ण निर्लिप्सा के साथ कहीं दूर जाकर साधारण भोजन पर उन्हें जीवन यापन करना पड़ा। बुद्ध और ईसा ने भी कष्ट उठाए। अवतरण होते हुए भी उन्हें कष्ट उठाने पड़े। राम और कृष्ण ने भी कष्ट उठाए। आप लोगों को कष्ट नहीं उठाने पड़ते, इसके विपरीत कष्टों से छुटकारा पाकर आप सगींत एवं आनन्दमय जीवन में प्रवेश कर जाते हैं।

सहजयोग में निरानन्द का आनन्द लेने के लिए व्यक्ति को समझाना होगा कि जिन मिथ्यावादों में वह रह रहा है उन्हें त्यागना आवश्यक है। कुछ लोगों में मिथ्या विचार होते हैं कि हम अति गरीब हैं या अति धनवान, हम अत्यन्त दुखी हैं या अत्यन्त सुखी आदि-आदि। यह सब मिथ्या भ्रम हैं। इन सब भ्रमों से पूर्ण रिक्तता ही पूर्ण रिक्तता ही पूर्ण आनन्द है। रिक्तता आनन्द से परिपूर्ण हो उठती है। तब आप किसी से कोई आशा नहीं करते और आपकी यह आन्तरिक रिक्तता आपको करुणा एवं प्रेम में प्रवेश करने का अवसर प्रदान करती है। किसी हांडी में यदि पहले ही कुछ भरा हुआ हो तो आप इसमें क्या डाल सकते हैं? आन्तरिक रूप से यदि आप रिक्त होगें तो भूत या भविष्य, अभिलाषाएँ, आकांक्षाएँ और असत्य आपमें न आएगें। यदि आप रिक्त हैं तो प्रेम के अतिरिक्त, शाश्वत स्वभाव के प्रेम के अतिरिक्त आप किसी चीज़ से नहीं भरते।

आप जानते है। कि देवी की सभी बातें अत्यन्त गहन एवं सूक्ष्म होती हैं। किस प्रकार उन्होंने माँ का रूप धारण किया और किस प्रकार प्रेम से अपने भक्तों की देखभाल की। किस प्रकार राक्षसों तथा नकारात्मकता से युद्ध किया। परन्तु अब राक्षस आपके हृदयों में प्रवेश कर गए हैं। यह झूठ-मूठ के गुरु आपके मस्तिष्क में घुस गए हैं। भंयकर पुस्तकों के माध्यम से बहुत सारी बुरी चीज़ें आ रही हैं जो सदा आप पर आक्रमण करती रहती हैं उन राक्षसों का वध भी कर दिया जाए फिर भी वे आपके मस्तिष्क पर छाए रहते हैं वे आपके मस्तिष्क में प्रतिबिम्बित हैं। जब यह बात समाप्त हो जाएगी तभी वास्तव में उनका वध हो सकेगा। उनसे छुटकारा पाना तभी सम्भव होगा अन्यथा वे स्वयं तो चले जाएंगे पर आपके मस्तिष्क

में अपने भूत छोड़ जाएंगे। गलत लोगों के अनुसरण करने तथा गलत पुस्तकों को पढ़ने से यह सारी नकारात्मकता आई है। सहजयोग में आने के पश्चात् भी कुछ लोग आपको पथ-भ्रष्ट कर सकते हैं। ऐसे व्यक्ति को क्षमा कर देना चाहिए। वह व्यक्ति तो हो सकता है कि सुधर जाए पर अकस्मात् उभरे उन मिथ्या विचारों में आप फंसे रह सकते हैं।

करुणा, प्रेम, भयहीनता, साहस और पूर्ण रिक्तता ही गुण हैं। इस रिक्तता में आपको यह चिन्ता नहीं होती कि आपने क्या प्राप्त करना है, कितने लोगों को इकट्ठा करना है, कितने लोगों को सहजयोगी बनना है? स्वत: ही यह सब कार्यान्वित होता है। परन्तु आपने न तो इसकी इच्छा करनी है और न ही उसके लिए उत्कंठित होना है। नकारात्मक और बेकार के लोगों के पीछे हमें नहीं दौड़ना। परन्तु वास्तविक रूप में अच्छे लोगों को हमें सहज में अवश्य लाना चाहिए। अपने आप नकारात्मक लोग सहजयोग से चले जाएंगे। एक ही झटके में बह चले जाएंगे। वे सहजयोग में इसलिए नहीं रह सकते क्योंकि उनमें इसकी योग्यता ही नहीं है। माँ की शक्तियां प्राप्त करने की योग्यता उनमें नहीं है। अत: यह सब अत्यन्त सूक्ष्म और सुन्दर ढंग से घटित हो जाता है। किसी भी कार्यक्रम में मैं देर से जाती हूँ ताकि बेकार लोग वहाँ से चले जाएँ और उनमें से कुछ थोड़े ही दिनों में गायब हो जाते हैं। उनके हृदय में कुछ नही उतरता। वे कुछ नहीं समझ पाते अत: गायब हो जाते हैं। जो बच जाते है, वे वास्तव में सत्य साधक होते हैं और उन्हें आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो जाता है। यह प्राकृतिक चयन घटित होता है। और जिस प्रकार लोग सहजयोग में आते हैं और चले जाते हैं यह अत्यन्त दिलचस्प बात है। सहजयोग में यह आम बात है। आपको परेशान नहीं होना चाहिए।

अब यदि रूस से बहुत से लोग सहजयोग में आएं पर स्विटजरलैण्ड से उतने न आएं तो आपको चिन्ता नहीं करनी चाहिए क्योंकि अब हम न तो रूसी हैं और न स्विस। हम सहजयोगी हैं। हम चाहे रूसी हों, भारतीय हों या अफ्रीकन हों जब तक हम सहजयोगी हैं हमें प्रसन्न रहना चाहिए। प्रेम को जब हम परस्पर बांटना चाहते हैं तब हमें सहजयोगी का अभाव खलता है, इसलिए नहीं कि हम स्विस हैं पर इसलिए कि हम प्रेम को बाँट नहीं पाते। उस समय एक नए व्यक्तित्व का जन्म होता है। यह नया व्यक्तित्व कार्य करता है। हमने आपको कोई पैसा या इनाम नहीं दिया। किस कारण से आप सहजयोग में इतना परिश्रम करते हैं। आप सहजयोग क्यों फैलाते हैं? क्योंकि आप अपने आनन्द को बांटना चाहते हैं। इसके बिना आप रह नहीं सकते। परन्तु सहजयोग में आप इसलिए बांटते हैं क्योंकि आप सामूहिक हैं। आप सामूहिक बन जाते हैं, अत्यन्त श्रेष्ठ व्यक्ति बन जाते हैं। आप सोचते हैं, "मै यदि इतना आनन्द प्राप्त कर रहा हूँ तो अन्य लोग क्यों न करें, क्यों न लोग भी उस आशीर्वाद को प्राप्त करें जिसे मैं कर रहा हूँ।" स्वत: ही जब मैं आप लोगों को कार्य करते देखती हूँ तो मुझे अवर्णनीय आनन्द प्राप्त होता है। सामूहिक चेतना के कारण ही मराठी संगीत कबैला में आ पाया और कार्यान्वित हो रहा है।

नए लोगों की बातचीत और नई चेतना यहाँ है। यह नया है क्या? ये नई सामूहिकता है। जब यह सामूहिकता कार्य करती है तब आप इसे फैलाना चाहते हैं। यह एक अन्य प्रकार की भूख है कि आप अधिक से अधिक भाई-बहन बनाना चाहते हैं उनकी सहायता करना चाहते हैं ताकि वे पूजाओं पर आ सकें और अच्छे सहजयोगी बन सकें। इस तरह की अभिलाषा दर्शाती है कि आपके हृदय में सामूहिकता पनप रही है और इसी कारण आप अकेले हिमालय में बैठकर सहजयोग का आनन्द नहीं ले सकते। आप अन्य लोगों की सहायता करना चाहते हैं। यह पहचान है कि किस प्रकार माँ के प्रेम की जड़ें आपके हृदय में लग गई हैं। और किस प्रकार आप सहजयोग का प्रचार करना चाहते हैं।

आप अपनी माँ की महान ज्योति बनें। आपमें वे सारी शक्तियां बह रही हैं। आपमें प्रज्जवलित ज्योति है जिसे आप अधिक से अधिक फैलाएँ और आप आश्चर्यचकित रह जाएगें और सन्त तुकाराम की तरह से कहेंगें कि, "मैं धूल के अणु की तरह से छोटा हूँ फिर भी गगन की तरह से विशाल हूँ" आपका व्यक्तित्व ऐसा ही है।

परमात्मा आपको आशीर्वादित करे।

●●

मास्को सार्वजनिक कार्यक्रम

परम पूज्य माता जी श्री निर्मला देवी का प्रवचन (सारांश)

12 सितम्बर 1994

सर्वप्रथम हमें यह जानना है कि सत्य जो है वो है। हम इसे बदल नहीं सकते। यह किसी पर लादा नहीं जा सकता। आपको यह मांगना पड़ता है। बिना आपकी इच्छा के यह आप पर लादा नहीं जा सकता। परन्तु यह अब अन्तिम निर्णय का समय है। आप यदि नर्क में जाना चाहें तो जा सकते हैं और यदि स्वर्ग में जाना चाहें तो भी जा सकते हैं। यह मात्र आपकी इच्छा है। यही शुद्ध इच्छा है। त्रिकोणाकार पवित्र अस्थि में आपके उत्थान की शक्ति है। यह आप सबमें है और आप सबकी अपनी है। परन्तु यह आपकी शुद्ध इच्छा की शक्ति है। मैं ऐसे बहुत से लोग देखती हूँ जो यह सोचते हैं कि वे बहुत अच्छे जा रहे हैं, वे अत्यन्त सन्तुष्ट और प्रसन्न लोग हैं। जिन्हें अन्य लोगों की कोई चिन्ता नहीं। अतः हमें सूझ-बूझ अपनानी पड़ती है। हमें यह समझने का विवेक होना चाहिए कि सभी धर्मों से ऊपर उठ कर सन्तुलन तक हमें पहुँचना है। परन्तु वे धन और सत्ता लोलुप हो जाते हैं। यही समस्या है कि जब हम धर्म की ओर जाते हैं तो निराश हो जाते हैं। लोगों को आत्माभिमुख होना होगा। उन्हें अपना आत्मसाक्षात्कार खोजना होगा। परन्तु, ऐसा न होने पर लोगों का विश्वास समाप्त हो जाता है।

यह अवैज्ञानिक है। अपने मस्तिष्क को खुला रखकर आपने स्वयं देखना है कि परमात्मा है या नहीं। केवल आत्मसाक्षात्कार द्वारा ही आप जान पाएंगे कि परमात्मा है। सर्वव्यापि दिव्य शक्ति है जिसे आपने अपने मध्य नाड़ी तन्त्र पर अनुभव करना है। आपके लिए आत्मसाक्षात्कार पा लेने का समय आ गया है। अपनी ही शक्ति के माध्यम से आप आत्मसाक्षात्कारी बन जाएंगे। जैसे ईसा ने कहा है कि आपको पुर्नजन्म लेना होगा, परन्तु लोगों ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया। अतः हम देखते हैं धर्म को मानने वाले लोग भी परस्पर लड़ते रहते हैं। वे एक दूसरे का सम्मान नहीं करते। उन्हें इस बात का ज्ञान नहीं है कि धन व सत्ता में लिप्त होना परमात्मा विरोधी गतिविधि है। सत्य की खोज करने वाले को समझ लेना चाहिए कि धन देने से आप सत्य को प्राप्त नहीं कर सकते परमात्मा धन को नहीं समझते, धन की उन्हें कोई परवाह नहीं। उत्थान आपका अधिकार है। इस सर्वव्यापक शक्ति का साक्षात्कार करना आपका अधिकार है। इसे प्राप्त करने का समय आ गया है। ऐसा करने पर आपको अपने अस्तित्व की वह स्थिति प्राप्त हो जाएगी जो अत्यन्त शक्तिशाली होगी। प्रगल्भ होने के साथ-साथ यह अत्यन्त करुणामय है। यदि आप वास्तव में सत्य साधक हैं तो आप इसे प्राप्त कर लेंगे, परन्तु यदि आप पाखण्डी या अहंकारी हैं, तो इसे न पा सकेंगे। यह मूर्खों के लिए भी नहीं है। अब हम चौराहे पर खड़े हैं। हर देश में अनगिनत समस्यायें हैं। रूस में भी हैं: इन समस्याओं का समाधान करने के लिए आपको मानव का परिवर्तन करना होगा। जब तक मानव परिवर्तित नहीं होता समस्याएँ उसके साथ लगी रहेंगी। यह परिवर्तन घटित होना ही होगा। यह पूरे विश्व को परिवर्तित कर देगा और व्यक्तिगत स्तर पर भी, शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक समस्याओं का समाधान कर देगा, तथा यह आपके, आपके देश के, एवम् पूरे विश्व के हित में होगा। समय आ गया है व्यक्ति को यह समझ

लेना चाहिए। यदि यह कार्यान्वित हो जाए तो आप स्वयं दिव्य प्रेम की इस सर्वव्यापक शक्ति को अपनी अंगुलियों के सिरों पर महसूस कर सकेंगे। पहली बार आप इसे महसूस करेंगे और तब आपको विश्वास करना होगा कि इस प्रकार कि शक्ति है। यदि आप ईमानदार हैं तो आपको विश्वास करना होगा।

आपको जो अनुभूति होती है वह अत्यन्त दिलचस्प है। सर्वप्रथम आप अपने अन्दर से शान्त हो जाते हैं। जो भी कुछ आप देखते हैं वह आपको साक्षी रूप में नाटक की तरह से प्रतीत होता है। अपनी समस्याओं से बाहर निकल कर आप अपनी समस्याओं को देख सकते हैं और तब इनका समाधान कर सकते हैं। विश्व की अधिकतर समस्याएं चक्रों की खराबी के कारण हैं। ये सब समस्याएँ मानव से आती हैं। यदि किसी तरह से आप चक्रों को ठीक करना सीख लें तो आप अपनी तथा अन्य लोगों की समस्याओं का समाधान कर सकते हैं। आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने पर आपका चित्त ज्योतिर्मय हो जाता है और आपका मस्तिष्क लालच और कामुकता विहीन, और आप स्वत: ही वास्तविक रूप से धर्म परायण हो जाते हैं। किसी को आपसे कुछ कहना नहीं पड़ता। आत्मा के प्रकाश में आप जान जाते हैं कि क्या गलत है और जो भी कुछ विध्वंसकारी होता है उसे आप त्याग देते हैं। कुण्डलिनी जागृत करने की शक्ति आपमें होने के कारण आप अन्य लोगों की भी सहायता कर सकते हैं। आप अपने एवं अन्य लोगों के विषय में जान सकते हैं। पर सबसे बड़ी बात तो यह है कि आप आनन्द के सागर में कूद जाते हैं, अर्थात् आप समाधि की अवस्था में होते हैं। आनन्द, प्रसन्नता और अप्रसननता से भिन्न है। हमारे अहं की जब सन्तुष्टि होती है तो हम प्रसन्न होते हैं। परन्तु अहम् को चोट लगने पर हमें दुख पहुँचता है। सिक्के के ये दो पहलू हैं। परन्तु आनन्द एकमात्र है। सबसे बड़ी बात जो होती है वह यह है कि पूर्ण सत्य को आप अपनी अंगुलियों के सिरों पर जान जाते हैं। आप यदि सत्य को जान जाते हैं, और आप सभी एक ही तरह से सत्य को समझते है, तो किस प्रकार का वाद-विवाद हो सकता है? कोई झगड़ा, युद्ध आदि नहीं रहता परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश करने का समय आ गया है, और परमात्मा आपकी देखभाल करते हैं। आपको उनसे जुड़े रहना होगा। यह जुड़े रहना ही योग है, जो कि अत्यंत स्वचालित है और इसका पूरा तंत्र आपमें बना हुआ है। आपको मात्र अपना हृदय खोलना होगा और आप इसे प्राप्त कर लेंगें।

●●

दिवाली पूजा

परम पूज्य माता जी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

ईस्ताम्बूल (तुर्की) 6-11-1994

दिवाली का अर्थ है दीपों की पंक्तियां। भारतवर्ष का यह अत्यन्त प्राचीन उत्सव है। नर्कासुर का वध करने के पश्चात् वर्ष की सबसे अंधेरी रात्रि में दिवाली मनाई गई थी। आधुनिक समय में यह अत्यन्त प्रतीकात्मक है, क्योंकि जहां तक चरित्रहीनता का सम्बन्ध है, यह आधुनिक समय सबसे बुरा है। हम इसे घोर कलियुग कहते हैं, पूर्णतया अन्धकार। यही कारण है कि इतने सारे संकट है। इसी के कारण से बहुत से लोग प्रकाश को खोज रहे हैं। अज्ञानवश लोग समझ नहीं पाते कि वे क्या करें? इस समय हज़ारों वास्तविक साधक जन्म ले चुके हैं। इसी कारण यह कार्य मुझे सौंपा गया था कि अज्ञानान्धकार को हटा कर दिवाली की सृष्टि करूँ।

यह कार्य सुगम नहीं है क्योंकि सत्य विरोधी सारी आसूरी शक्तियां एक ओर हैं और दूसरी ओर आपकी साधना का लाभ उठाने वाले झूठे लोग हैं। सर्वप्रथम तो लोगों को पता ही नहीं कि वे क्या खोजें। यह सब झूठे गुरु धन संचालित हैं तथा अपने झूठ को बेचने का प्रयत्न कर रहें हैं। बगौटा दूरदर्शन पर किसी ने मुझसे पूछा कि साम्प्रदायों और इस प्रकार की अन्य वस्तुओं के विषय में आपका क्या विचार है? यह सत्य है कि बहुत से कुटिल, भयानक तथा अपराधी लोग स्वयं को आध्यात्मिक कहते हैं। गलती तो उनका अनुसरण करने वालों की है। एक दुष्चरित्र और बेईमान व्यक्ति गुरु नहीं हो सकता। गुरु को कुछ मांगना नहीं चाहिए, उसे लालची नहीं होना चाहिए। ये सारी बातें शास्त्रों में लिखी हुई हैं। परन्तु कोई भी पढ़ने का कष्ट नहीं करता कि गुरु में क्या गुण होने चाहिएं? वे बस एक ही बात कहते हैं कि आपको सभी कुछ समर्पित कर देना है।

दिवाली के अन्तिम दिन बहन-भाई मिलकर पवित्र एवम् संरक्षक सम्बन्धों के लिए प्रार्थना करते हुए उत्सव को मनाते हैं। ऐसा मात्र ये दर्शाने के लिए होता है कि दीपक जलाने के पश्चात् सच्चरित्र समाज की पहली प्राथमिकता होनी चाहिए। चरित्रहीनता आजकल का महानतम अन्धकार है, लोग यह भी नहीं समझते कि उनके पारस्परिक सम्बन्ध क्या हैं? मोहम्मद साहिब ने स्त्री के विषय में नियमाचरण बनाये। उन्होंने कहा कि कोई भी स्त्री यदि कामुक दृष्टि से पुरुष की ओर देखे तो उसे आधा गाड़ कर पत्थरों से मार दिया जाना चाहिए। ऐसा यदि होता, तो मै नहीं समझ पाती, कि अमेरिकन स्त्रियों का क्या होता। आधुनिक मानव सर्वसाधारण मानव से भी कहीं अधिक पतित है क्योंकि हर समय उसे कुछ न कुछ विध्वंसक चाहिए।

मुझे लगा कि आत्मसाक्षात्कार दिये बिना मानव से किसी भी अच्छी चीज़ के बारे में बात करना सुगम नहीं है। जब तक आप उन्हें आत्मसाक्षात्कार नहीं देते उनके मस्तिष्क में कुछ नहीं घुस सकता, भाषण उपदेश तो केवल मानसिक स्तर तक ही रहेंगे। आत्मसाक्षात्कार ही विश्व को बचाने का एकमात्र मार्ग है। विश्व के इतिहास की अन्धकारमय रात्रि में हमें बहुत से दीपकों की आवश्यकता थी। मुझे मानव तथा उसकी समस्याओं के विषय में अध्ययन करना पड़ा। भारत में हमारे यहां मिट्टी की हांडी होती है। यह शरीर, मस्तिष्क और दिखाई देने वाला सभी कुछ अन्दर से हांडी की तरह से है। प्रेम और करुणा इसका तेल है। कुण्डलिनी,

शुद्ध, इच्छा, बाती है और आत्मा चिंगारी है। सर्वप्रथम हांडी को ठीक होना होगा। हांडी में तेल को संभालने की शक्ति होनी चाहिए, वह इसे रिसने न दे। अहम् तथा बन्धन दो अत्यन्त समस्याप्रद छिद्र है। धर्म, वंश या जाति आदि के बन्धन जिनसे हम अपनी रचना करते हैं, ये सब व्यर्थ हैं, गन्दे बन्धन हैं। इनमें कोई वास्तविक्ता नहीं, ये सब बेकार हो जाते हैं। भूत बाधाओं के रूप में यह कार्य करते हैं और व्यक्ति पूर्णतया अन्धा हो जाता। सहजयोग में आने के पश्चात् भी ईसाई ईसा से, मुसलमान मोहम्मद साहिब से तथा अन्य लोग अपने पुराने बन्धनों से चिपके रहते हैं। एक ही व्यक्ति में वे इन सबका संगठन नहीं देख सकते। व्यक्ति को समझना चाहिए कि अब उसे प्रकाश प्राप्त हो गया है। आप आत्मसाक्षात्कारी हैं, द्विज बन गए हैं।

सभी असत्य आपको त्याग देने हैं। यदि आप पूर्णतया साक्षात्कारी हैं तो आप स्वत: ही इन्हें छोड़ देगें, आपको बताने की कोई आवश्यकता नहीं रहेगी। आत्मा स्वत: ही अपने उत्तरदायित्व को महसूस करती है कि उसे प्रकाश देना है। इसे मात्र बताना होगा कि कृपा करके प्रकाश प्रदान करो, यह शाश्वत प्रकाश है इसे कोई समाप्त नहीं कर सकता। गीता का एक श्लोक है, "इसे कोई मार नहीं सकता, इसका नाश नहीं कर सकता इसे यदि आप अन्दर उड़ेल लेना चाहें तो भी आप ऐसा नहीं कर सकते, यह इतना शक्तिशाली प्रकाश है। यह शाश्वत है या नहीं इसका सत्यापन आप कर सकते हैं। अध्यात्मिकता के इतिहास में बहुत लोगों को आत्म साक्षात्कार प्राप्त हुआ वे इतनी सुन्दर ज्योति है। जब आप इस शाश्वत प्रकाश के वाहक हैं तो किस प्रकार यह मूर्खतापूर्ण, गन्दे और व्यर्थ के बन्धन आप पर स्वामित्व जमा सकते हैं? जब आप आत्म दर्शन करने लगेंगे कि यह शाश्वत प्रकाश है तो सारे बन्धन भगा देगें। आपको स्वतन्त्रता है। आपको यदि यह शाश्वत प्रकाश चाहिए तो आप इसे ले लें अन्यथा यह प्रकाश क्षतविक्षत हो सकता है।

अहम् एक अन्य छिद्र है। बन्धन जिन्हें उत्तरदायित्व विवेक द्वारा दूर किया जा सकता है, उन्हें यदि अहम् का आश्रय मिल जाये तो अत्यन्त भयानक हो सकते हैं। यह प्रकाश अग्नि बन सकता है और सहजयोग के घर को जला सकता है। प्रकाश ज्योति देने के लिए होता है घर जलाने के लिए नहीं। सहजयोग में यदि अहम् है तो आप स्वयं को इसके लिए जिम्मेवार समझ सकते हैं। यह जिम्मेवारी की भावना कहीं आपको सहजयोग का संचालक होने का विचार न देदे। शनै: शनै: आप इतने आक्रामक हो जाते हैं कि लोग आश्चर्यचकित हो जाते हैं कि यह व्यक्ति कितना सामान्य था और कितना उद्दण्ड हो गया है। आप सहजयोग के कार्यभारी नहीं है। सरकारी कर्मचारी होने चाहिएं परन्तु वे मालिक बन बैठते हैं। अत: सहजयोग में पूर्ण विवेकशील सूझबूझ होनी चाहिए।

दूसरा भाग तेल है जो कि स्वभाविक अन्तर्जात तथा आनन्ददायी है। करुणा को पवित्र होना होगा मैने बहुत से ऐसे सहजयोगी देखे हैं जो अगुआओं को कष्ट देने का प्रयत्न करते हैं। अगुआ का विरोध करके वे सहजयोग में बाधा-डालने का प्रयत्न करते हैं। उनसे सहजयोगी होने की अपेक्षा की जाती है पर वे यह नहीं समझते कि यदि उनकी करुणा पवित्र होगी तो वो अगुआ के कार्य की सराहना करेंगे क्योंकि अगुआ इतना करुणामय कार्य कर रहा है। पवित्र करुणा का लालच प्रलोभनों से कोई सम्बन्ध नहीं होता। व्यक्ति को अगुआ से प्रेम करना चाहिए तथा उसके कार्य की सराहना करनी चाहिए। करुणा कभी अपवित्र नहीं हो सकती परन्तु इस करुणा की अभिव्यक्ति इतने अच्छे ढंग से होनी चाहिए कि कोई आपकी करुणा पर संशय न कर सके। बहुत समय पहले मुझे बताया गया था कि भारतीय हवाई पत्तनों पर लिखा हुआ था "सीमा शुल्क अधिकारियों को न चूमे।" आधुनिक युग में व्यक्ति किसी स्त्री को तो चूम सकता है परन्तु स्त्री किसी पुरुष को नहीं। फुटबाल के

खेल में भी वे परस्पर गले नहीं मिल सकते, एक दूसरे का वे केवल हाथ छू लेते हैं। अब मैंने देखा है, कि गोल करके व्यक्ति इतने उत्तेजित हो जाते हैं कि वे मैदान से बाहर दौड़ पड़ते हैं, उनकी समझ में नहीं आता कि क्या करें? सहजयोग में पुरुष दूसरे पुरुष को चूम सकता है उसे गले लगा सकता है, इसमें कोई बुराई नहीं। पुरुष स्त्रियों को तथा स्त्रियां पुरुषों को न छुएं। यह क्या मूर्खता है? आप अपने प्रेम की अभिव्यक्ति नहीं कर सकते। एक महिला अपने से बहुत कम आयु के पुरुष को छू सकती है और एक पुरुष अपने से बहुत अधिक आयु कि महिला को करुणा में शालीनता का होना उतना ही आवश्यक है जैसे शरीर में सुगंन्ध का। अपनी करुणा की अभिव्यक्ति हम किस प्रकार करते हैं? अब सहजयोग में राखी बहनें। और राखी भाई हैं। हमें समझना चाहिए कि हम करुणा के लिए राखी भाई और बहनें हैं धन के लिए नहीं। राखी सम्बन्धों की अभिव्यक्ति परस्पर सुरक्षा की भावना से करनी चाहिए।

करुणा इतनी आनन्ददायी होती है कि इसमें धन या किसी अन्य प्रकार के बन्धन नहीं होने चाहिएं क्योंकि इनसे आनन्द का अन्त हो जाता है। अपने प्रेम की अभिव्यक्ति करने के लिए आप कोई चीज़ उपहार के रूप में दे सकते हैं यह आनन्द प्रदान करती हैं। परन्तु कभी भी ऐसा नहीं होना चाहिए कि आप यह उपहार अपनी राखी बहन को तो दे दें परन्तु अपनी पत्नी को न दें। करुणा की बूंद को पेड़ के अन्दर प्रसारित होकर भिन्न हिस्सों को भिन्न प्रकार से, आपेक्षित रूप से प्रेम देना होगा। आपमें यदि महत्वाकांक्षा है तो यह केवल सहजयोग के विषय में होनी चाहिए, ताकि आप विनम्र हो जाएं। सहजयोग का एक वचन है कि आपका जीवन आनन्द से परिपूर्ण हो जाएगा। आपको अपने आंखें निकालने और हाथ काटने की कोई आवश्यकता नहीं। यदि आपमें बहुत अधिक छिद्र (कमियां) हैं तो आपको सहजयोग में आने की कोई आवश्यकता नहीं। आपको पवित्र होना होगा। जो भी कुछ उपलब्धियां आपने प्राप्त की हैं वे आपके साथ जुड़ी हुई हैं।

एक अन्य चीज़ जिसका वचन आपको दिया गया है, वह है आनन्द के अनुभव का आशीर्वाद। हो सकता है कि आप किसी दुर्घटना से बचा लिए जाने पर आश्चर्यचकित हों। सभी आशीर्वाद का अनुभव करते है। आप भी करें। सर्वप्रथम यह निराकार रूप में होती है। इस स्तर पर कोई भी जान सकता है कि विचार क्या है? बाद में यह भाषा बन जाती है। निराकार को यदि आप पकड़ सकते हैं तब इसे जानते है। परन्तु आपको बहुत सा चित्त लगाना होगा। आपकी कुण्डलिनी यदि आपके चक्रों की खराबी के कारण कार्यान्वित नहीं हो रही तो आपको कहना है कि "आप हैं, आप हैं," "त्वमेव साक्षात," आप ये न कहें "आप ही परमपूज्य हैं," आप कहें "आप गणेश हैं"। इससे आपके चक्रों की सारी अपवित्रता धुल जाती है। आपके बन्धन और भी ठीक हो जाते हैं। तब आप किसी कार्य का श्रेय नहीं लेते, आपको नहीं लगता कि आप कुछ कर रहे हैं और आपका पूर्ण व्यक्तित्व एक पूर्ण यंत्र में परिवर्तित हो जाता है। तब आप अपने कार्य को और अन्य सभी कार्यों को परमात्मा के कार्य के रूप में देखते हैं। इस प्रकार आप ज्योतिर्मय हो जाते हैं। इस प्रकार आप शान्ति और आनन्द के दीप बन जाते हैं। आज हम सहजयोग के प्रकाश की दिवाली का उत्सव मना रहे हैं। मेरी समझ में नहीं आ रहा कि क्या कहूँ, कितने आनन्द की स्थिति में मैं हूँ। आनन्द की सभी तरंगे मुझे अभिभूत कर रही हैं। इसका वर्णन शब्दों में नहीं हो सकता। यह दीपक ध्यान धारणा से प्रज्जवलित है, और इस प्रकाश में आप अत्यन्त सुदृढ़ बन सकते हैं।

परमात्मा आपको धन्य करें।

●●